तृतीय अध्याय

'इदन्नमम' की कथावस्तु और उसकी विशेषताएँ

तृतीय अध्याय

'इदन्नमम' की कथावस्तु और उसकी विशेषताएँ

भारतीय साहित्य और पाश्चात्य साहित्य में कथात्मक कृतियों का मूल्यांकन किया जाता है, तब निम्नलिखित तत्वों को मूल्यांकन के आधार माना जाता है - 1. कथानक, 2. पात्र, 3. संवाद, 4. देश - काल - वातावरण, 5. भाव - शैली, 6. उद्‌देश्य। लेकिन ''आँचलिक शिल्प विधान के उपन्यासों में उपन्यास के सभी उपकरणों का दृष्टिकेन्द्र या प्रकाशन ध्येय परिसीमित देश (क्षेत्र) विशेष हो जाता है और अन्य तत्व इसी से नियम-निर्णीत होते है।''[1] अर्थात, आँचलिक उपन्यासों में स्थान विशेष को महत्व होता है, स्थान विशेष (अंचल) नायक के रूप में उभरता है और उसके विशिष्टताओं से वहाँ के मानवीय जीवन को बद्‌ध करता है। 'अंचल' विशेष से प्रभावित मानवीय घटनाओं (कथाओं) के साथ अन्य तत्व घुलमिलकर चलने लगते है। जिसमें उपन्यासकार आँचलिक उपन्यास में अंचल से बद्‌ध व्यक्ति, समाज और जीवन के वास्तविक पहलूओं को पाठक के सामने प्रस्तुत करता है। ''इसका तात्पर्य यह नहीं है कि आँचलिक उपन्यास स्थानीय दृश्यों तक ही सीमित रहता है। वस्तुतः आशय और कथ्य की दृष्टी से आँचलिक उपन्यास किसी भी अन्य मूल्यवान उपन्यास के समान होता है। किसी भी उपन्यास या कलाकृति का मूल्य जिन तत्वों की उपस्थिति से होता है, वे तत्व यदि आँचलिक उपन्यास में हैं; तो आँचलिक उपन्यास उतने ही स्थायी मूल्य के हैं; जितने अन्य उपन्यास हैं या हो सकते हैं। बल्कि एक गतिहीन समाज और सामाजिक जीवन को मानव-गतिविधि की नई दिशाओं से परिचित कराने के कारण आँचलिक उपन्यास अधिक प्रगतिशील और मूल्यवान कहे जा सकते है।''[2] 'इदन्नमम' के संदर्भ में हम स्थानविशेष को महत्व देकर उसके आँचलिक रूपों, विशेषताओं को स्पष्ट करते हुए कथानक को, आँचलिक-विशेषता को उपन्यास के तत्वों के आधार पर प्रस्तुत करते है -

3.1 'इदन्नमम' की कथावस्तु (तात्विक विवेचन) :-

आँचलिक उपन्यासों की कथा 'अँचल' विशेष पर आधारित होती है। मैत्रेयी पुष्पा के 'इदन्नमम' की कथा उनकी मातृभूमी 'बुंदेलखंड' के ओरछा पहाडी में स्थित बेंतवा और नर्मदा

---

1. डॉ. सत्यपाल चुघ, 'प्रेमचन्दोत्तर उपन्यासों की शिल्प-विधि', (शोध-प्रबंध), प्रं. लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र. सं. 1968, पृ. 556.
2. सम्पादक - राजेन्द्र अवस्थी, 'श्रेष्ठ सत्रह आंचलिक कहानियाँ', पृ. भूमिका से 16.

नदी किनारे स्थित श्यामली, सोनपुरा, परिछा, गोपालपुरा और आस-पास के गाँव-मनगाँव की कथा है। इसी भूमी के तीन पीढ़ियों का नेतृत्व करनेवाली बऊ, प्रेम (बहू) और मंदा के जीवन के सुख-दु:खों का चित्रण यहाँ का भूखंड स्वयं नायक बनकर बुंदेलखंडी भाषा में प्रस्तुत होता है। ''अंचल के जटिल जीवन चित्र को अंकित करने के लिए लेखक कहीं मोटी रेखाएँ खींचता है, कहीं पतली, कहीं अवकाशों को भरने के लिए दो-चार बिन्दु अपनी तूलिका से झाड देता है। अनेक पर्वों, उत्सवों, परम्पराओं, विश्वासों, व्यथा के अवसरों, गीतों, संघर्षों, प्रकृति के रंगों, पुराने नये अपेक्षा करता है।''[1] 'इदन्नमम' की कथा भी स्थान विशेषता को लेकर पात्रों का चारित्रिक विकास प्रस्तुत करती है। 'अंचल' अपनी विशेषता से मानव जीवन पर गहरा प्रभाव डालता हुआ उसे जीवन संघर्ष के लिए दिग्दर्शित करता रहता है, उसे जीने के लिये चेतना निर्माण करता है। 'इदन्नमम' की मंदा बचपन से पितृछत्र से वंचित है जिसे जीवन की प्रलयकारिता का सामना करना पडता है। मंदा के सामने रूढियों, परम्पराओं, इर्ष्याओं और सुख-दु:खों से भरा समाज जीवन है; जिससे गुजरते हुए एक नया समाज निर्माण करने का स्वप्न लेकर मंदा नायिका के रूप में उभरती है। उपन्यास में बहु, कुसुमा भाभी, दादा पंचमसिंह, डब्बल बब्बा, मिट्टू काका, गोविंदसिंह, अमरसिंह, मकरंद, विक्रमसिंह और उसकी पत्नी, प्रेम (बहू), डॉ. इन्द्रनील, अभिलाखसिंह, लीला राउतीन और गणेशी, और सगुणा की कथाएँ और टिकमसिंह (कोयले के महाराज) की कथाएँ जीवन की व्यथा-कथा बताते उपन्यास को प्रस्तुत करती है।

'इदन्नमम' के प्रारंभ विधवा बऊ की दयनीय कथा है, जो परम्परावादी स्त्री है। बेटे महेंदर की हत्या हो जाने पर और बहू प्रेम का रतन यादव जीना के साथ भाग जाने पर प्रेम को कोसती रहनेवाली बऊ अपने खानदान की अंतिम निशानी मंदा को रतन यादव से बचाने के लिये श्यामली गांव आकर दादा पंचमसिंह के यहाँ पनाह पाती है। मंदा को पाकर जमीन-जायदाद हडप करने के लिए रतन यादव प्रेम के माध्यम से बउपर केस डालता है। रतन यादव कुप्रवृत्ति का एक राजनीतिक नेता है, जिसने अब तक तीन विधवाओं की जमीन चांपे बैठा है। ''तीन विधवाओं की जमीन चांपे बैठा है रतन यादव। किसी को भगाकर तो किसी को बहला फुसलाकर। और उससे बढ़कर है उसका बेटा राजू यादव।''[2] रतन यादव के बहकावे

---

1. डॉ. जवाहर सिंह, 'हिन्दी के आंचलिक उपन्यासों की शिल्प विधि, पृ. 80.
2. मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम', किताबघर प्रकाशन नयी दिल्ली, पाँचवा संस्करण - 2006, पृ. 126.

में आकर मंदा को बचपनावस्था में छोडकर प्रेम बउ भाग जाती है जरूर परंतु बाद में उसे पछतावा होने लगता है।

श्यामली गांव के दादा पंचमसिंह गांधीवादी विचार के धरोहर है। दादा पंचमसिंह, मोदीलल्ला और चीफ साहब तीनों राष्ट्रीय एकात्मता के पुरस्कर्ता है जो श्यामली गाँव में कभी भी विभेद की भावना न फैले ऐसा सोचते रहते है। श्यामली गांव जातीय, धार्मिक एकात्मता का प्रतिक है। श्यामली गांव के माध्यम से मैत्रेयी पुष्पा ने आजादी के बाद भारतीय ग्रामों में जो अपनत्व, एकात्मता का भाव था उसका चित्रण किया है - 'बऊ कहती हैं, धरती-आसमान का अन्तर हैं। सोनपुरा और श्यामली में फरक ही फरक है। यहीं की तो रीति-रसम ही अलग है। शहरों में कुछ भी होता रहे, अँगरेजी पढे लोग न मानें जाति-बिरादरी, पर अर्पीनी, गांव-पुरबों में ऐसी अनीत नहीं है अभी।''[1]

स्वतंत्रता के बाद समाज सुधारकों के विचार हो या पाश्चात्य सभ्यता के परिणाम स्वरूप हो भारतीय ग्रामों में स्थित जातीय व्यवस्था टूट रही थी। उच्च-नीच का भेद कम होते हुए गांव इकठ्ठा होकर सुख-दु:ख झेलने लगा था।

श्यामली गांव में पनाह पाई बउ स्वाभिमानी है जो मुफ्त की रोटी खाना अमान्य करते हुए अपनी भूमी दादा पंचमसिंह के भाई गोविंद सिंह को दे देती है। पाँचवी क्लास तक शिक्षा प्राप्त की मंदा श्यामली में अपने अकेले पन से राहत पाने के लिए दादा पंचमसिंह के पोते मकरंद के साथ जुड जाती है। मंदा और मकरंद की प्रेम कहानी यहा शुरू होती है। बउ की भूमी हडपने के इरादे से गोविन्दसिंह मंदा की शादी अपने घर के किसी लडके से करने की बात करता है। जहाँ एकल परिवार के बीच आज जमीन-जायदाद के लिए होते संघर्ष को लेखिकाने चित्रित किया है। मंदा की शादी मकरंद से तय होती है और उनकी सगाई होती। श्यामली गांव प्रेम से मंदा को बचाने के लिये उसे अलग-अलग भेजा जाता है। चीफ साहब की बहन अनवरी के गांव मुस्लीम परिवार में जाकर बऊ और मंदा रहती है। वहाँ रक्षाबंधन और भुजुरियाँ जैसे धार्मिक उत्सवों का वर्णन आया है जिसके माध्यम से लेखिकाने बुंदलखंड की सांस्कृतिक परम्परा का परिचय दिया है। मंदा का मकरंद के साथ होली खेलना, फागुन के दिन याद करना और मंदा के सगाई के समय गांव कि औरत के साथ बउ का विदाई का गीत गाना लोक संस्कृति का परिचायक है।

1. मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम', किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवा संस्करण - 2006, पृ. 33..

रतन यादव से बचाने के लिये दादा पंचमसिंह मंदा को ओरछा किले में स्थित कंचना घाटी में एक गढ़ी पर भेज देते है जहाँ उन्हें डब्बल बब्बा (लखना डाकू) ले जाता है।उनके साथ कुसुमा भाभी और अमर सिंह (दाउजू) चले जाते हैं। मंदा और मकरंद के साथ-साथ कुसमा भाभी और अमर सिंह की प्रेम कहानी शुरू हो जाती है जो एक अवैध-संबंध है। कुसुमा अपने पती यशपाल द्वारा प्रेम न पाने के कारण अपने ससूर जो अविवाहित और रूग्ण रहे अमरसिंह से जूड जाती है, जिससे वह अवैध संतान को भी जन्म देती है। कुसमा भाभी के माध्यम से मैत्रेयी पुष्पा ने अपने हक के लिए अधिकार के लिए जागृत हुई एक चेतित नारी के रूप में कुसमा भाभी का पात्र चित्रित किया है।

ओरछा गढ़ी से निकल पड़ी बउ को मंदा को लेकर बिरगांव में ठहरने के लिये कहा जाता है जो कुसुमा भाभी के सौतन का मैयका है। वहाँ भरत मामा के विश्वास पर मंदा को रखा जाता है, परंतु बिमार रह मंदा वहाँ कैलाश मास्टर जैसा शिक्षित इन्सान मंदा पर बलात्कार करता है। मंदा अपने मन में एक अपराधी भाव लेकर श्यामली पहुँच जाती है। जहाँ श्यामली में दादा पंचमसिंह और गोविन्द सिंह के बीच बऊ के जमीन को लेकर झगडा हो जाता है। गोविन्द सिंह बऊ की जमीन बेच देता है। अंत में मंदा और मकरंद की सगाई टूट जाती है और सात साल बाद अठारह की हुई मंदा अपने गांव 'सोनपुरा' बऊ को लकर लौट आती है।

सात साल बाद लौटी बऊ अपने गांव को पहचान नहीं पाती है। सरकारी विकास योजना के माध्यम से गांव में क्रैशर लगे है। गांव में सड़क तैयार की गई है। गांव का रंग-रूप ही बदला है। गांव आकर बऊ को पता चलता है अपनी जमीन गोविन्द सिंह ने अभिलाख सिंह (पहाड का ठेकेदार) को बेच दी है और वह जमीन के एक टूकडे पर गुजर-बसर करने लगती है। मंदा गांव-गांव जाकर रामायण का पाठ पढाने लगती है। श्यामली गांव में रहकर आई मंदा दादा पंचमसिंह से प्रेरणा लेकर अपने गांव का हुलियाँ बदलने की ठान लेती है। औद्योगिकरण के शिकंजे में आया और अभिलाख जैसे ठेकेदार के हाथ में चला गया गांव शोषित, मजदूर बनकर जीवनयापन कर रहा है। बऊ मंदा को कोयले वाले महाराज के यहाँ भेज देती है। वहाँ कायेले वाले महाराज उसे पारीछा गांव की कहानी बताते, जिस गांव के टिकमसिंह सरकार ने लायी बाँध परियोजना का विरोध करने के लिए गांववालों को जागृत करते हुए अपने अधिकार प्राप्त किये थे। पारिछा गांव की कहानी सुनकर आई मंदा अपने गांव अपने पिताजी

का अधुरा रहा अस्पताल का सपना पुरा करने के साथ-साथ गांववालों को अपने हक के लडने के लिये तैयार करती है। पहाड के ठेकेदार भैय्या जी और अभिलाख सिंह से संघर्ष करने के लिए वह मानो जागृती अभियान चलाती है। "सो जागो रे जागो। चेतो रे चेतो। छोटे-बड़े, नन्हे-मुन्ने, बूढे-पुराने, नये जवानों के अलावा ढोर-चोंपे, परेवा-पंछी, नदी-ताल, पेड-रूख, हवा-पानी यहाँ तक कि दसों दिशाओं को जगाना होगा। बचने-बचाने को जूझना होगा। अमीर-गरीब, शत्रु-मित्र सब को शामिल होना होगा इस यज्ञ में। समय पडे तो समिधा-सामग्री भी बनना होगा। बात होम की है। बात आन्दोलन की है।"[1] गांववालों में शोषण के विरुद्ध आवाज उठाती मंदा अनेक संघर्षो से गुजरती गांव का प्रतिनिधीत्व करते हुए शोषक खलनायक अभिलाख सिंह के साथ जंग छेड देती है। दूर घाटी में पहाडियों के बीच गांव की समस्याओं को प्रस्तुत करते हुए मंदा के माध्यम से लेखिका ने आज के गंदी, स्वार्थी राजनीति को 'इदन्नमम' के माध्यम से सामने लाते हुए, सेठ, साहूकार, कारखाना मालिक, सरकारी अफसरों की कुनीतियों का पर्दाफाश किया है।

'इदन्नमम' उपन्यास में गावों में स्थित रूढी-प्रथा-परम्परा, अंधविश्वास, नारी शोषण, अवैध यौन-सम्बन्ध, जातीय एवं साम्प्रदायिक तनाव, किसान के मजदूर बने लोगों का जीवन, वनों से भगाये गये आदिवासी मजदूर, शोषक और गुंडाई प्रवृत्तियाँ, गंदी राजनीति और हत्याकांड, टूटते एकल परिवार, जमीन-जायदाद की हड़पनीति, चुनावी नीति, जातीय-साम्प्रदायिक भेदभाव, ग्रामीण जीवन पर आतंक फैलाने वाले डाकू, रिश्तेदारी में उभरने वाले तनाव, सरकार के विरुद्ध आन्दोलन, प्रशासकीय भ्रष्टाचार, गांव की आरोग्य, शिक्षा की समस्याएँ, वहाँ के लोगों की भाषा, लोकसंस्कृती आदी पहलूओं को लेकर लेखिका मैत्रेयी पुष्पा ने 'इदन्नमम' उपन्यास में बुंदेलखंड अंचल की विशेषता के साथ-साथ बदलते समाज जीवन का अंकन किया है - "भाषा की स्थानीयता, सामाजिक, व्यक्तिगत, राजनीतिक, आर्थिक-संघर्ष के बीच भरपूर स्थानीय यथार्थ को उभारते हुए स्त्री की संघर्षशीलता और सार्थकता ढूंढने की संवेदनशील आंचलिक कथा कही गई है।"[2] इस तरह 'इदन्नमम' में बुंदेलखंड अंचल की झाँकियाँ प्रस्तुत करते हुए, औद्योगिकरण के परिणामस्वरूप, ग्रामांचल के टूटते बिखरते परिदृश्यों का चित्रण सफलता के साथ किया है।

---

1. मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम', किताबघर प्रकाशन नयी दिल्ली, पाँचवा संस्करण - 2006, पृ. 197.
2. विद्या सिन्हा, 'आधुनिक परिदृश्य : आंचलिकता और हिन्दी उपन्यास', वाणी प्रकाशन, नयी दिल्तली, प्र.सं.2001, पृ. 150.

लेखिका मैत्रेयी पुष्पा ने आज के परिदृश्य में अंचल यथार्थता को प्रस्तुत करते हुए उत्पन्न समस्याओं का चित्रण किया है। 'इदन्नमम' बुंदेलखंड की सीमित भौगोलिक क्षेत्र के बदलते मानवीय जीवन चित्रण के माध्यम से भारतीय ग्रामों की बदलती स्थिती का अंकन सफलता के साथ करते हुऐ पुरे भारत वर्ष की जनता उसकी समस्याएँ, व्यथा और संघर्ष को पूरे उपन्यास में विश्लेषित करते हुए समग्रता से चित्रित किया है; जिससे प्रेमचंदजी जैसे पुरे भारत वर्ष का चित्रांकन करने की ताकद मैत्रेयी के उपन्यास में दिखाई देती है।

3.2 'इदन्नमम' कथावस्तु की विशेषताएँ :-

मैत्रेयी पुष्पा ने 'इदन्नमम' उपन्यास में बुंदेलखंड के बेतवा और नर्मदा नदी तट परओरछा घाटी में स्थित गांवों का चित्रण किया है। जंगल-पहाडों से आच्छादित दूर-दराज में बसे ग्रामीण लोग और आदिवासी लोग परम्परागत समाज व्यवस्था के बीच जी रहे थे, परंतु आजादी के बाद देश की आर्थिक उन्नती हेतू और गांवों के लोगों के जीवन में सुधार लाने के लिये अनेक योजनाओं का निर्माण भारत सरकार ने किया। बुंदेलखंड में औद्योगिक विकास के नाम पर पहाड़ों पर क्रैशर लगवाये गये जिसके परिणामस्वरूप गांव की अपनी व्यवस्था टूट कर आज गांव अनेक समस्याओं का सामना कर रहा है। 'इदन्नमम' में औद्योगिकरण के परिणाम स्वरूप टूटे-बिखरे गांव की समस्याओं का चित्रण प्रस्तुत होता है।

3.2.1 'इदन्नमम' में यातायात के लिये कठिण परिवेश :- भारत के 70 प्रतिशत लोग आज भी ग्रामों में बसे है। ग्रामों में बसे लोगों का जीवन शिक्षा, अंधश्रद्धा, रूढि एवं परम्परा, शोषण, अन्याय-अत्याचार से ग्रस्त है। गांव के लोगों का पिछडेपन का कारण उनके पास नये विचार, नये सुधारवादी योजनाओं को पहुँचाने में सरकारी दफ्तर से उदासीन प्रवृत्ति कारण बनी दिखाई देती है। सरकार अनेक योजनाओं का निर्माण कर रही है परंतु दूर-दराज में बसे गांवों की तरफ शिक्षित लोग जाने के लिये तैयार नहीं है। डॉ. शिवाजी नाले कहते है - "स्वातंत्र्योत्तर काल में सरकार द्वारा ग्रामों के सुधार के लिए अनेक प्रकल्प और योजनाएँ कार्यान्वित की गई हैं और उनके विकास के लिए कोशिश भी की जा रही है। किन्तु सरकारी योजनाओं की असफलता और ग्रामीण लोगों के अज्ञानी, अशिक्षित होने के कारण उनका विकास नहीं हो रहा है।"[1] ग्रामों का विकास योजनाओं से दूर रहने का कारण यातायात के

---

1. डॉ. शिवाजी नाले, 'रामदरश मिश्र की कहानियों में ग्रामीण जीवन', विद्या प्रकाशन, कानपुर, प्र. सं. 2004, पृ. 50.

साधनों का अभाव है, क्योंकि यातायात के साधन उपलब्ध न होने के कारण और पहाड जंगलों के बीच निकलनेवाले रास्ते के कारण गांव के लोग शहर की ओर नहीं जाते और नही अविकसित गावों की तरफ नगरवासीय आना चाहते है। परिणामस्वरूप यातायात के साधन के अभाव में उत्पन्न समस्याओं का चित्रण 'इदन्नमम' में दृष्टव्य है -

उपन्यास की नायिका मंदा के बीमार हो जाने पर उसे बीरगांव से डॉक्टर के पास ले जाते समय वन कंदराओं से निकलते रास्ते का चित्रण दृष्टव्य है - "बीहड में बढती बैलगाडी में बैठकर कुसमा ने दाये-बायें आँखे पसारकर देखा तो पलकें खोले रह गयी, "ओ मतारी! हैं तो हम भी इतई के, पर जा बियाबान को क्या कहें! रात के समय जे भरका नहीं दिखाने थे। मट्टी के जितेक उंचे ढूह, उतेक ही नीची खाई। पेड न रूख। कँटीले झूँड, ही झूँड।"

"काहे भइया, यहाँ तो दूर-दूर तक गाँव-गिराम नहीं! आदमी जात की छाया तक नहीं दिखाई पर रही! लो हमारे भीतर तो पनचक्की-सी चलन लगी हैं, घबडाहट के मारे! तुम्हें नही डर लगता?"

गाडीवान ने पैनियाँ की कील बैल की पीठ में चुभोते हुए है ऽऽ, आ, आ, सुथे। कहते हुए गाड़ी की गति तेज कर दी। फिर बोला, "जिज्जी, डर - भै मानें तो रहें कैसे? भगके कहाँ जावें?"

"कोई डाकू-माकू तो नहीं आता-जाता इन गाँवों में?" अपना संशय धरा कुसमा ने।

गाडीवान ने लापरवाही से उत्तर दिया, "डाकू! अब डाकू कहाँ धरे! अब तो उठाई-गीरा हैं ससुर! कहों, गैलारों को लूट ले, पईसा-मईसा छिना लेवें।"[1]

जहाँ यातायात का साधन सिर्फ बैलगाडी है और वह भी पहाडों के रास्ते से निकलना याने मौत को न्यौता देना जैसा है क्योंकि बुंदेलखंड डकैती के लिये हमेशा प्रसिद्ध रहा है जिसके कारण अकेला इन्सान इन पहाडियों के बीच से यात्रा करने से डरता है। प्रकृति के माध्यम से लेखिका ने अंचल परिवेश का यथार्थ चित्रण किया है।

यातायात के लिये असुविधा रहने पर उत्पन्न होनेवाली समस्याओं को 'इदन्नमम' की नायिका 'मंदा' इस क्षेत्र के विधायक मंत्री राजा साब के सामने प्रस्तुत करती है - "आप

---

1. मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम', किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवा संस्करण - 2006, पृ. 89-90.

सोचते होंगे, यहाँ के लोगों का रूख ऐसा कैसे हुआ ? ऐसा गाव क्यों अपना बैठे? सो भी हम आपके बताते हैं .... असल में इस क्षेत्र के गाँव शहर-कस्बों से दूर पडते हैं। दूर ही नहीं, बहुत दूर। सौदा-सुलफ की जरूरत तो गाँव से चीजें बदलकर पूरी लेते हैं, या कुछ दिन अपनी जरूरतों को काटकर भी गुजर कर लेते हैं। मन समझा लेते हैं कि जब गाडी बैलों का साधन मिलेगा तब हो आयेगें एरच, उरई।''

''लेकिन हारी-बीमारी को क्या करें? दर्द पीर और मौत की छटपटाहट में तड़पता आदमी तो नहीं कर सकता इन्तजार। बरसात-भर बिना इलाज के नहीं पड़ा रह सकता गांव में ठेला-ट्रक भी बन्द हो जाता है तब तो। गारे और कीचड के कारण परेशान रहती है यहाँ की जनता।''[1]

उपर्युक्त उदाहरण से यह स्पष्ट होता है कि आजादी के 50 वर्ष बाद भी यातायात के साधनों के अभाव के कारण भारतीय ग्रामों का जीवन अनेक समस्याओं को लेकर जी रहा है। दूर-दराज में बैठे इन लोगों का जीवन अपनी विशिष्टताओं से घिरा है, अपने जीवन संघर्ष के बीच जीने वाला यहाँ का इन्सान अपनी नियती मानकर जी रहा है। इस तरह आँचलिक उपन्यासों में प्राकृतिक परिवेश के प्रभाव से आबद्ध समाज जीवन का चित्रण अपनी विशेषता रही है।

3.2.2 'इदन्नमम' में स्टोन क्रैशर से ग्रसित गांव :- 'इदन्नमम' में स्टोन क्रेशर से ग्रसित गांव 'सोनपुरा' कथा के केंद्र में आता है। सोनपुरा गांव प्रकृति के बीच पहाडों में बसा गांव है। सरकारी विकास योजनाओं के परिणामस्वरूप गांव के पहाडों पर क्रैशर लगाये गये है। बउ और मंदा श्यामली गाँव से सोनपुरा सात साल बाद लौटती है। तब बउ अपने गांव को पहचान नहीं पाती। विकास परियोजनाओं के कारण गांव का रंग रूप ही बदल गया है।

पहाड़ों पर लगे क्रैशर के कारण गांव के लोगों की रोजी-रोटी छिन ली है, गांव विस्थापितों की यातनाओं को भुगत रहा है। किसान से मजदूर बने लोगों का जीवन का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत होता है - ''बेतवा के किनारे बसे पारीछा गांव में सरिया, मुरम, गिट्टी और पत्थर ट्रक भर-भरकर आने लगे। खेतों में होकर सडके बनाई जाने लगी और उन सडकों पर इंजनों का कर्णभेदी कोलाहल घरघराने लगा। फसलें ही नहीं, जैसे किसानों के कलेजे रौंदे जाने लगे हों। छटपटाने लगा आसपास के गाँवों का किसान वर्ग।''[2]

---

1. मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम', किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवा संस्करण - 2006, पृ. 307.
2. वही, पृ. 188.

आजादी के बाद सरकार ने समाजवादी विचार को प्रस्थापित करने हेतु समाज में एकता प्रस्थापित करने, आर्थिक समानता लाने हेतू, विकास योजनाओं का निर्माण किया । जिन गांवों में यह योजनाओं का आरंभ किया गया वहाँ के लोग विस्थापित होकर फिर दुसरी जगह जाकर सहजता से अपनी जड़े नहीं बसा पाये, परिणामस्वरूप अपने गांव में ही रहना उन्होंने पसंद किया। उनके समस्याओं का सामना करते हुए गांव के लोग जीवनयापन कर रहे है। औद्योगिकरण के परिणामस्वरूप टूटे-बिखरे गांव का चित्रण टिकमसिंह के माध्यम से लेखिका ने प्रस्तुत किया है - "महापर्व ही था, बिटिया, किसी के लिए विकास का महापर्व तो किसी के लिये विनाश का महापर्व। पारीछा खुर्द जसौरा - खडेसर के विनाश का महापर्व। यहाँ के निवासियों को अपनी भूमि से उखाडा जा रहा था। बेदखल किया जा रहा था, खदेड़ा जा रहा था।"

"मुआवजे के नाम पर क्या मिलता है, सो तो तुम अच्छी तरह जानती हो। तुमारे गाँव के लोग मुआवजा पाये हुए बैठे हैं।"

"ऐलान हो गया।"

"सरकारी ऐलान की डौडी पिटते ही गाँववालों की नींदे उड गयी। मगज मारा गया। विक्षिप्त बौराने-से देखते एक-दूसरे को। निगाहें ऐसी जैसे पुतलियाँ सूख रही हों।" परम्परा से गांव की अपनी एक व्यवस्था थी जिसके साहय्यता से गांव के व्यवहार चलते थे परंतु गांव के टूटते बिखरने के कारण रोजी रोटी की समस्या निर्माण हो जाती है - "कौन-सा किसब करेंगे? दुकान खोलेंगे या खोमचा लगायेंगे? या कोई रेहड़ी? सब्जी-भाजी बेचेंगे या जूतों की मरम्मत या गोली-बिस्कुट की दुकान? पीढ़ियों से चली आ रही किसानी छोडकर कौन-सा व्यापार चुनें? निभा भी पायेंगे या नहीं? कुछ सुझता न था। चतुर से चतुर बुद्धिमान किसान मतिभ्रम में पड़ा था।"[1]

औद्ययोगिकरण के कारण गांव-गांव में कल-कारखाने शुरू हुये परंतु गांव में चलनेवाले छोटे-छोटे व्यवसाय बन्द हो गए और गांवों का आर्थिक ढाँचा बिखर गया। साथ में अनेक संकटों को लेकर औद्योगिकरण का आगमन हो गया - "क्रैशर क्या आया, शराब के ठेका संग ले आया। सो तबाह हो रही हैं गृहस्थियाँ। उजड़ रहे हैं बाल-बच्चे! आदमी पी-

---

1. मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम', किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवा संस्करण - 2006, पृ. 188.

पीकर बेसुध हुआ जा रहा है। आपकी पुलिस निहत्यों को ही करती है परेशान। बताइये, किससे कहें?''[1]

औद्योगिकरण के कारण गाँवों में बेकारी, शोषण, अन्याय-अत्याचार के साथ-साथ शराब के ठेके, वेश्यालय आदि समस्याएँ निर्माण हो गई है। 'इदन्नमम' में क्रैशर पर लगे शराब केठेकों पर आदिवासी मजदूर लोगों के छोटे-छोटे बच्चे काम करते है, जिस कारण बचपन में ही उन्हें शराब की आदत लग जाती है। अभिलाख, जगेसर जैसे ठेकेदार, मालिक लोग मजदूर स्त्रियों को वेश्या व्यवसाय करने के लिये बेच देते है।

देश में औद्योगिकरण के माध्यम से समाज में आर्थिक समानता लाने का प्रयास जरूर रहा, परंतु स्वार्थी लोग, राजनीति नेता लोग, भ्रष्ट सरकारी नोकरदार वर्ग, ठेकेदार, कारखान मालिकों के कारण समाज की आर्थिक उन्नती होने के बजाय जन-सामान्य के जीवन में अनेक विसंगतियाँ निर्माण हो गयी। 'इदन्नमम' में औद्योगिकरण के कारण निर्माण हुई समस्याओं से घिरा संघर्ष भरे समाज जीवन का यथार्थ चित्रण चित्रित हुआ है।

3.2.3 'इदन्नमम' में शिक्षा संबंधी समस्याएँ :- 2009 में भारतीय संविधान ने 'शिक्षा' को मूलभूत अधिकार के रूप में स्विकार किया है। आज के विज्ञान युग में शिक्षा के बिना राष्ट्र का विकास नहीं हो सकता है। 'शिक्षा' ही एक मात्र साधन है, जिसके द्वारा व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र का सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक विकास हो सकता है। अत: भारत देश का 70 प्रतिशत समाज ग्रामों में बसा है, जहाँ आज भी 'शिक्षा' पहुँची नही है। 'सर्व शिक्षा अभियान' जैसे अभियानों के माध्यम से गांव-गांव में 'शिक्षा' पहुँचाने का प्रयत्न भारत सरकार की ओर से किया जाता है परंतु अज्ञान और कुपमण्डुकता की प्रवृत्ति के कारण आज भी गांव का समाज 'शिक्षा' प्राप्त नहीं कर रहा है। लडकियों को पढ़ना आज भी गांव के परम्परावादी विचार के लोगों को स्विकार्य नहीं है। 'इदन्नमम' में पाँचवी कक्षा से आगे पढाई की माँग करनेवाली मंदा को बऊ कहती है - ''बिटिया, और बालकों को होड़ जिन करो।''[2] गांव में आज भी लडकियों को शिक्षा से दूर रखा जाता है। पाँचवी-आठवी क्लास से आगे गांव में स्कूल भी न रहने के कारण आगे की पढ़ाई बीच में ही छोडनी पड़ती है। गंदी

1. मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम', किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवा संस्करण - 2006, पृ. 308.
2. वही, पृ. 50.

राजनीति के कारण गांव में स्कूल भी नहीं आने देते - "बातें क्रैशर की ही क्या, विभिन्न मुद्दों पर हुई, पोस्ट ऑफिस से लेकर स्कूल, सड़क और फिर अस्पताल तक आ पहुँची। नरसिंहगढ के सरपंच जी कहने लगे, "इस अंधेर को क्या करें कि सड़क के आसपास के गांवों में दो-दो स्कूल और अपने दूर-दराजी गांव मीलों पर एक स्कूल के लिए तरसते हैं।"[1]

भारतीय ग्रामों में अज्ञान, अशिक्षा के कारण आज भी शिक्षा पानेवालों की संख्या कम है और जहाँ कहीं शिक्षा पहुँची है वहाँ गरीबी, गंदी राजनीति के कारण जनसामान्य लोग 'शिक्षा' से दूर होते चले जा रहे है। जैसे भृगुदेव अछूत होने के कारण उस पर कॉलेज में रैगिंग हो जाती उसके दोस्त की मौत भी हो जाती है जिस कारण भृगुदेव अपनी डॉक्टरी की शिक्षा बीच में ही छोड देता है। शहरों में शिक्षा हासिल करने के लिए होड सी लगी है जिस कारण शिक्षा क्षेत्र में भ्रष्टनीति का आगमन हो गया है। 'शिक्षा' में चलनेवाले भ्रष्टाचार का वर्णन मकरंद अपने पत्र के माध्यम से मंदा को बता देता है - "मेहनत तो की थी मैंने, लेकिन डर लगता था, यहाँ चलती राजनीति से। प्रोफेसरों की औलाद राज करती है यहाँ। उन्हीं के बेटे-बेटियों से खतरा रहता है। अंधेर मचा रखा है इन लोगों ने। श्रम पर गुणा-भाग का कब्जा।"[2] मैत्रेयी ने आज 'शिक्षा' व्यवस्था में जो भ्रष्टाचार पनप रहा है इसका चित्रण करने के साथ-साथ गरिबी के कारण शिक्षा से वंचित रहनेवाले एक दुसरे समाज का भी चित्रण प्रस्तुत किया है। "मन्दा, जो बच्चा मजूरी नहीं करते माई-बाप के संग? इनके तो बिटिया, पैदा पीछे होते हैं, काम धन्धे की पहले सोचने लगते हैं बाप-मताई।"

"मजूरी तो नहीं, बेगार करते हैं काकी। दिन-भर छिटकी गई गिट्टी बीनते रहते हैं। बदले में किसी ने दस पैसे हथेली पर रख दिये तो बड़ी बात। एकाध रोटी दे देते हैं ठेकेदार लोग। जो तनिक बडे है वे शराब के ठेके से बोतल-मोतल लाने, नमकीन और बीड़ी-माचिस की व्यवस्था करने में लगे रहते हैं। दारू के लिए गिलास और मग धोते रहते हैं। नहीं करते है तो पिटते हैं। सो सोचा है कि स्कूल में रहेंगे तो इन सब बातों से कुछ समय को तो बचे ही रहेंगे।"[3] इस तरह शिक्षा क्षेत्र में एक तरफ भ्रष्टाचार बढ़ रहा है, तो दूसरी तरफ अज्ञान, बेकारी, गरीबी के कारण समाज का एक वर्ग शिक्षा से काफी दूर है, इस सत्यता को 'इदन्नमम' में मैत्रेयी पुष्पा ने चित्रित किया है।

---

1. मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम', किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवा संस्करण - 2006, पृ. 232.
2. वही, पृ. 245.
3. वही, पृ. 218.

3.2.4 'इदन्नमम' में आरोग्य विषयक समस्या :- ग्रामीण लोग अज्ञान या अन्धविश्वास के कारण गांव में फैली बीमारी को देवी का प्रकोप मानकर चलते थे, गांव के वैद्य से हारी-बीमारी पर इलाज करना ही वह उचित मानते थे। आज गांव-कस्बे में सरकार ने प्राथमिक आरोग्य केंद्रों का निर्माण किया है, परंतु गांव से दूर रहे अस्पताल में आने-जाने के यातायात केसाधन उपलब्ध न होना, इलाज के लिए पैसे उपलब्ध न होने के कारण बीमार आदमी अस्पताल नहीं जाता है। वर्तमान समय में तो कल-कारखानों, बढते व्यसनों के कारण ग्रामीण जीवन का आरोग्य बिगड़ता जा रहा है। समाज में अनेक बीमारियों से ग्रस्त लोग नजर आने लगे है। दूर-दराज के गांवों में बने अस्पताल में शिक्षित नव युवक डॉक्टरी करने के लिए उत्सुक नहीं है जिसकारण गांव के अस्पताल बिना डॉक्टर के बंद होते जा रहे है। मैत्रेयी पुष्पा ने 'इदन्नमम' में औद्योगिकरण के कारण गांवों में निर्माण स्वास्थ्य समस्याओं का चित्रण इस तरह किया है -

'इदन्नमम' उपन्यास में 'सोनपुरा' गांव में मंदा के पिताजी महेंदर ने अस्पताल बनवाया था, उसके उद्घाटन समारोह में ही राजनीतिक लोगों द्वारा महेंदर की हत्या की जाती है। 'श्यामली' गांव में पनाह पाई मंदा सात साल बाद अपने गांव सोनपुरा पहुँचने पर पिताजी का अस्पताल का अधुरा रहा स्वप्न पूरा करने की ठान लेती है। चुनाव के समय गांव में आये नेता राजासाब को वह कहती है - "यह हमारा अस्पताल .... कोई डॉक्टर नहीं यहाँ, दवायें नहीं, हारी-बीमारी के निवारण की कोई सुविधा नहीं। इस अस्पताल से तबाह ही हुए हैं हम और इस अस्पताल की झूठी आशा उम्मीद ने अब तक जिताया है आपको।"[1] गांव में अस्पताल है लेकिन डॉक्टर नहीं आते। यहाँ पर कोई डॉक्टर भेजा जायेगा और अस्पताल शुरू हो जायेगा इस उम्मीद में गांव के लोग आपको चुनाव में वोट देते है। इस सत्यता को मंदा राजासाब के सामने स्पष्ट करते हुए कहती है - आपकी सरकार ने यहाँ के पहाड पर क्रैशर तो लगवा दिये परंतु इस क्रैशर ने गांव के लोगों को अनेक बीमारियाँ दी - "क्रैशरों ने पहाड काटकर उसके पत्थर ही नहीं पीसे, यहाँ के लोगों का जीवन पीस डाला. राई-रेत कर दी साँसे।"[2] ..... और फिर उरई-झाँसी तक जाने के लिए दस बार सोचना पड़ता है रोज-रोज। इतना किराया - भाड़ा, उपर से दवा और डॉक्टर की फीस! किसके पास धरा है गाँव में। बड़ी

---

1. मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम', किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवा संस्करण - 2006, पृ. 307.
2. वही, पृ. 307.

दिक्कत है राजासाब जी, बडी परेशानी। क्रैशरों के कारण गाँवों में धूल ही धूल छायी रहती है। पहले के मुकाबले दमा, साँस तपे दिक कई गुना अधिक फैल गये हैं। मजदूरों के ही नहीं, किसानों के शरीर भी हो गये है इन बीमारियों के घर।''[1] सरकार किस तरह ग्रामीण लोगों के स्वास्थ्य के प्रति उदासीन है इसका उदाहरण भी यहाँ प्रस्तुत हुए है - ''बिल्डींग तो है ही, आप ही बुला दो कहीं से डॉक्टर। भइयाजी डॉक्टर रोजिनदारी पर तो मिलता नहीं कि ले आवें हम। सरकार मेहरबानी - कृपा करती नहीं। आप लोग आगे आते तो हो सकता था कुछ। जितना हमारे पास होगा हम लगा देंगे अकेली से तो नहीं हो पायेगा आर्थिक प्रबंध। सामूहिक काम है यह तो।''[2]

इस तरह पहाडी इलाकों में बसे गावों में निर्माण हुए औद्योगिक क्षेत्र के कारण अनेक बीमारियों का आगमन हुआ है, परंतु अस्पताल का न होना, डॉक्टर उपलब्ध न होना, पैसा न होना और यातायात के साधनों की कमी के कारण गाँव के लोग अनेक बीमारियों के शिकार होते जा रहे है। मैत्रेयी पुष्पा ने इस ओर संकेत किया है कि अगर गांव में अस्पताल उपलब्ध नहीं हैं तो वहाँ पर कारखानदार मालिक एकत्रित होकर अस्पताल शुरू कर देते है तो गांव के किसान, कारखानों में काम करनेवाले मजदूरों के आरोग्य की समस्याएँ हल हो सकती है। इस तरह औद्योगिकरण से निर्माण हुई आरोग्य समस्या के चित्रण के साथ-साथ उस पर उपाय योजना की बात भी 'इदन्नमम' में दिखाई देती है।

3.2.5 'इदन्नमम' में किसान, मजदूरों का शोषण :- प्राचीन काल से भारतीय समाज में जाती व्यवस्था प्रचलित थी, जिसके माध्यम से प्रत्येक जाति का अपना व्यवसाय था और उनसे उत्पन्न वस्तुओं के आदान-प्रदान पर गांव का कारोबार चलता था। आज विज्ञान के अविष्कार के परिणामस्वरूप यंत्रयुग में जी रहे मानव के व्यवसायों को छिन लिया है, जाति पर आधारित व्यवसाय खत्म होते चले गये। औद्योगिकरण ने भारतीय समाज व्यवस्था खण्डित की परंतु परम्परा से नीचले जाति के लोगों का शोषण करनेवाला सेठ, साहूकार, जमींदार वर्ग आजादी के बाद कारखानों, मीलों के मालिक बनकर किसान से भूमिहर और मजदूर बने लोगों का शोषण कर रहे है। आजादी के बाद सेठ-साहूकर, धनिक-पूंजीपति बने मालिक लोगों द्वारा मजदूरों के किये जानेवाले शोषण का चित्रण 'इदन्नमम' में मैत्रीय पुष्पा ने बड़ी यथार्थता के साथ किया है।

---

1. मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम', किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवा संस्करण - 2006, पृ. 307.
2. वही, पृ. 276.

मंदा सोनपूरा गांव के पहाडियों पर रहनेवाले राउत मजदूरों के बस्ती से गुजर रही है। वहाँ के मजदूरों के दयनीय जीवन को वह देखती है, और उन्हें चेतित करने की, हक्क के लिये लडने के लिये जागृत करना चाहती है। पहाड का मालिक खलनायक अभिलाखसिंह किस प्रकार मजदूरों का शोषण करता है इसका बहुत ही जीवंत उदाहरण प्रस्तुत होता है - "वे कहने लगे, जुरा चढ़ा है तो? पइसा फँसा पड़ा है उसके लिए क्या करें हम? सोलिंग नहीं होता तो मशिन में क्या पिसेगा? जगा जल्दी, एक ट्रक सोलिंग निकालेगा।"

"आय दइया! मालिक जी को मनह करने की हिम्मित जाने कैसे तो पर गयी। आग लगे मोरी जुबान को। दाता से मों-बाद करन लगे। ऐन फटकारा अपने-आपको।"

"लाचार विवस हो गए हम। सोचते तो रहे कि खाँसी उखार परी तो? साँस किसी विध न थमी तो? पर जिज्जी, कह नहीं पाए कुछ भी।"

"मालिक जी हमारी बेबसी कितनी समझे, कितनी नहीं, सो नहीं कह सकते हम तुमसे। उन्ने अपने कारे रंग के बैग में से सफेद रंगी बोतल निकारी और हमें पकरा दी।"[1] इस तरह बीमार मजदूरों को दवा करने के बजाय उन्हें दारू पिलाकर काम करने के लिए मालिक लोग विवश करते है। पैसों के पीछे पडे मालिक लोग शोषण की पाशें में मजदूरों को पीस रहे है। साथ ही मजदूर लोगों की स्त्रियों का शोषण होता ही रहता है। "जिज्जी, बाल-बच्चा भूखे मरते रहें। कोई पुछउआ नहीं फिर। पूछें तो जनी-मानसों को, उन्हें बुलावें रात-बिरात। अब बताओं, कैसे काटते जिन्दगानी?"[2] शोषण के बारे में बलवंत जाधव जी ने लिखा है - "भारतीय समाज में वर्णव्यवस्था ने शक्ति और धन के आधार पर सवर्णों को इज्जत, सम्मान, प्रतिष्ठा के अधिकारी बनाया है। ग्रामों में दलित युवतियाँ उनके पंजे में फँसकर उनके विलास की सामग्री बनती हैं।"[3] आजादी के बाद देश में जातीव्यवस्था खंडित हुई परंतु उसकी जगह वर्गव्यवस्था ने लेली। शोषक और शोषित इन दो वर्गों में विभाजित आज के भारतीय समाज में सेठ, साहूकार, मालिकों, अफसरों, ठेकेदारों के माध्यम से मजदूरों का शोषण हो रहा है। 'इदन्नमम' में अभिलाखसिंह के साथ-साथ उसका मित्र जगेसरा राउत जाती की लडकी अहिल्या को फसाकर उसका शोषण करता है।

---

1. मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम', किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवा संस्करण - 2006, पृ. 229.
2. वही, पृ. 236.
3. बलवंत साधु जाधव, 'प्रेमचंद के साहित्य में दलित चेतना', अलका प्रकाशन, कानपुर. प्र. सं. 1992, पृ. 183.

भारत देश में आज भी अज्ञान, अशिक्षित लोग, मजदूर, किसान वर्ग का शोषण हो रहा है जिससे दयनीय अवस्था में जीनेवाले मजदूर लोगों के जीवन में अनेक यातना झेलनी पडती है। मालिकों द्वारा मजदूरों की पीटाई करना, उन्हें झूठे इल्जामों में फँसाना, बाल-बच्चों को बेगारी पर लगाना, स्त्रियों की इज्जत लूटना इस प्रकार से मजदूरों का शोषण हो रहा है। 'इदन्नमम' में शोषित किसान और मजदूरों को जागृत करने की कहानी है, जिसमें अंचल परिवेश साथ बनकर जनता को जीवन जीने की प्रेरणा देता है।

3.2.6 'इदन्नमम' में स्त्री-पुरुष संबंध :- भारतीय समाज में प्राचीन काल से स्त्री और पुरुष के सहजीवन के लिये विवाह संस्था की निर्मिति की गई दिखाई देती है। विवाह के बाद पति-पत्नी के सम्बन्ध पर पारिवारिक जीवन की उन्नती आधारित रहती है; क्योंकि इनके सहयोग और आपसी प्रेमभाव से परिवार समृद्ध हो जाता था। भारतीय समाज में पत्नी अपने पति को ईश्वर मानकर उसकी पूजा करती थी और पति भी उसका उतना ही सम्मान करता था। भारतीय समाज में स्थित संयुक्त परिवार पद्धति के कारण पति-पत्नी रिश्ते को मजबूत बनाने में बुजुर्गों के विचार और बाल-बच्चों का प्रेम साह्यभूत रहता था। परंतु आधुनिक काल में एकल परिवार के कारण पति-पत्नी के रिश्ते में दरार आती दिखाई दे रही है। पति-पत्नी का रिश्ता जिस विश्वास के आधार पर खडा रहता था वही विश्वास, स्नेह, प्रेम की भावना कम होती नजर आ रही है। औद्योगिकरण, भौतिकवादी प्रवृत्ति के कारण स्वार्थी बना इन्सान रिश्तेदारी पर विश्वास नहीं कर रहा है। परिणामस्वरूप समाज में नैतिक मूल्यों में गिरावट आ रही है। भौतिक सुविधा, संस्कारहीनता, पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव इन कारणों से परिवार टूट रहे है। मैत्रेयी पुष्पा ने 'इदन्नमम' में टूटते परिवार के चित्रण के साथ स्त्री-पुरुष संबंधों पर प्रकाश डाला है।

अ) पति-पत्नी संबंध :- पति-पत्नी का नाता स्नेह, विश्वास और समर्पण की भावना पर आधारित होता है, इसमें किसी एक का विश्वासघात संबंधों में दरार उत्पन्न करता है। 'इदन्नमम' में कुसुमा भाभी के पति यशपाल उससे प्रेम, स्नेह नहीं रखतें उसके संबंध में वह कहती है - "अगिन सांच्छी करके ही आये थे तुम्हारू पूत के संग। सात भाँवरे फिर के लिहाज रखा उसने? निभाया सम्बन्ध?"

"दूसरी बिटा दी हमारी छाती पर।"

"अँधेरे पीते रहे तुम लोग! खाक है नूढेपन पर।"

"उस दिन से कोई सम्बनध, कोई नाता नहीं रहा हमारा।"

"जो ब्याहकर लाया था उससे ही कोई तालुक नहीं तों इस घर में हमारा कौन ससुर और कौन जेठ?"[1] पति-पत्नी के संबंध में आशारानी व्होरा कहती है - "दोनों को एक दूसरे के प्रति विश्वास और वफादारी रखनी चाहिए। जीवन केवल मौज-मस्ती के लिए नहीं है।"[2] पति-पत्नी के संबंध में वफादारी नहीं रहती है तो वहाँ अवैध-संबंध की नींव डाली जाती है। इस बात को कुसुमा भाभी और यशपाल के उदाहरण से स्पष्ट किया गया है।

प्रेमी के रूप में स्त्री-पुरुष संबंध :- 'प्रेम' यह एक ऐसी भावना है जिसके माध्यम से स्त्री-पुरुष एक-दूसरे के प्रति आकर्षित होकर समर्पित हो जाते है, परंतु 'प्रेम' का अर्थ कामवासना की पूर्ति नहीं है। प्रेम के माध्यम से स्त्री-पुरुष एक-दूसरे से एकनिष्ठता, प्रगाढ़ता और आत्मसमर्पण की भावना से जुड जाते है। 'प्रेम' एक अमूल्य भावना है जिसके बारे में वेदप्रकाश अमिताभ कहते है - "बहुत पिछडे और असभ्य समझी जानेवाली जातियों से लेकर आधुनिकता से संघात से चौंकते अंचलों के व्यक्तियों में 'प्रेम' प्राय: एक मूल्यवान, वस्तू भावना के रूप में ग्राह्य है।"[3]

"आँचलिक उपन्यासों में 'प्रेम' का जो स्वरूप उभरा है, वह परंपरा विरोधी न होते हुए भी रूढियों, वर्जनाओं और निषेधों के विरोध में है। यह न तो प्राचीन शौर्यपूर्ण प्रेम (शिवेलियर्स लव) के मेल में है और न प्रेम के उस पुराने मिथक को समर्थन देता है कि पुरुष नृत्य है और नारी लता। प्राय: प्रेम के साथ समानता, त्याग, बलिदान, संघर्ष की अवधारणाएँ भी जुडी हुई हैं। आंचलिक उपन्यासकार के लिए प्रेम न केवल विचार अपितु अनुभव और व्यवहार के स्तर पर भी मूल्यवान है। प्रेम को तह न तो 'सेक्स' तक सीमित करने के पक्ष में है।" विजय मोहन सिंह का यह आरोप आंशिक तौर पर ही सत्य है कि आंचलिक उपन्यास रचनात्मक स्तर पर परंपरागत या प्रचलित प्रेम धारणा का कोई विकल्प नहीं ढूंढ पाएँ।"[4]

1. मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम', किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवा संस्करण - 2006, पृ. 146.
2. आशारानी व्होरा, 'भारतीय नारी : अस्मिता और अधिकार', नेशनल पब्लिकेशन हाऊस, दिल्तली, प्र. सं. 1986, पृ. 112.
3. वेदप्रकाश अमिताभ, 'आंचलिक उपन्यासों में मूल्य-संक्रमण', वाणी प्रकाशन, नयी दिल्तली, प्र. सं. 1997, पृ. 58.
4. विजय मोहन सिंह, 'आधुनिक हिंदी उपन्यासों में प्रेम की परिकल्पना', पृ. 374.

मैत्रेयी पुष्पा ने 'प्रेम' को 'सेक्स' के रूप में नहीं देखा है। बल्कि, स्त्री-पुरुष एक-साथ रहते हुए सुख-दुःख के वीतराग में एकत्रित हो आना नैसर्गिक बात है। इसलिए वह कहती है - "समष्टिगत प्रेम मानव को दुःखों के गर्त से बाहर खींचता है।"[1] इस तरह मैत्रेयी पुष्पा ने प्रेम को जीवन का आवश्यक अंग माना है।

भारतीय मूल्य परंपरा के अनुसार प्रेम भावना को शारीरिक समर्पण के रूप में विवाह के बाद ही व्यक्त किया जा सकता है परंतु विवाहपूर्व यौनसंबंध स्थापित करते प्रेम के संक्रमण से गुजरते रूप का चित्रण मंदा और मकरंद के माध्यम से चित्रित किया है - "मकरन्द ने उसकी बाँह कसकर पकड़ी और जा पहुँचे ढोर वाली बखरी में, जहाँ कोई न था। जहाँ अंधेरा था। जहाँ वे एक-दुसरे को देख तक ना पा रहे थे।"

"हाथ छोडो।"

"नहीं।"

एकाएक मकरन्द ने अपनी बाँहों के घेरे में ले लिया उसे।

वह चौंक गयी।

कसमसाने लगी।

"रहलीं हमारे बिना?" अपनी छाती से उसे चिपकाकर पूछ रहे थे मकरन्द।

वह मछली की तरह छिटककर दूर हो गयी।

वे पुन्हा बाँहों में समेटते हुए बोले, "हमारी दी हुई चीजों की कीमत लौटाई मन्दा .. वापिस कर दिया हमारा प्या....।"

उत्तर में फिर से मकरन्द के सीने पर सिर टिका दिया मन्दाकिनी ने।"[2]

'इदन्नमम' में मंदा और मकरंद के रोमानी प्रेम का वर्णन आया है। परंतु वेदप्रकाश अमिताभ आंचलिक उपन्यासों में चित्रित प्रेम के बारे में कहते हैं - "रोमाँटिक प्रेम के साथ यह मान्यता बद्ध मूल रही है कि विवाह रोमाँटिक प्रेम का परिणाम होना चाहिए। लेकिन आंचलिक उपन्यासों में 'प्रेम' के रोमानी रूप को बहुत कुछ महत्व देते हुए भी उसकी अनिवार्य परिणति विवाह में नहीं मानी है। आगे हम देखेंगे कि 'विवाह' भी आँचलिक उपन्यासकारों के

1. मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम', किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवा संस्करण - 2006, पृ. 163.
2. वही, पृ. 55.

लिए अनिवार्य नहीं है। प्रेम में उत्कटता, कल्पना और कोमलता का बारबार समर्थन करते हुए वे जीवन को ठोस जमीन पर बराबर बने रहते हैं। रोमानी प्रेम का आनंद उनके लिए जीवन का एक अंग है, उसका मुख्य प्रयोजन कभी नहीं बनता।''[1]

वेदप्रकाश अमिताभ का यह मंतव्य 'इदन्नमम' पर भी लागू होता है। मैत्रेयी पुष्पा ने भी मंदा और मकरंद का प्रेम विवाह में परिणित होते नहीं दिखलाया है, बल्कि प्रेम मनुष्य जीवन का अभिन्न अंग है। जिसमें आकर्षण, खुलापन, संयम, त्याग, समर्पण की भावना मूल में रहती है जिससे स्त्री-पुरुष एक-दुसरे से जुड़ जाते है। मंदा और मकरंद का प्रेम भी संयम और त्याग का जीवंत उदाहरण है। सोनपुरा गांव के विकास का व्रत ली हुई मंदा अंत में अपने प्रेम का त्याग करती है। तो मकरंद 'संयम' का उदाहरण है - इलाहाबाद में एम. डी. शिक्षा हासिल कर रहे मकरंद को उसके मित्र चिढ़ाते है - समीर उसे चिढ़ाता है - ''पता है क्या बोला? कहता था कि साले, तुम तो कुंआरे ही मरोगे। इसलिए हमारी शादी से कुढ़ रहे हो। अपन ठहरे नॉर्मल आदमी और तुम मकरन्द, पुरे तथागत गौतम बुद्ध। कन्यायें चक्कर काट-काटकर थक गयीं, लौंट गयीं, आपने अपनी पवित्र दृष्टि नहीं फेरी उन पर। धातु पुरुष जी, तुम्हारा हृदय नहीं पिघला तो श्राप भी भोगो। आसानी से तुम्हारा ब्याह इस जनम में होनेवाला नहीं।''[2] मंदा और मकरन्द का प्रेम संयमशील तो है ही उसके साथ-साथ वह एक दूसरे के प्रति वफादार भी है इसलिए दोनो एक-दुसरे की प्रतीक्षा करते रहते है - ''पता नहीं मन्दा। प्रतीक्षा क्यों अनन्त हो गयी?''

''वैतरणी तटविहीन! मैं और तुम दोनों मिलकर प्रार्थना करेंगे पार उतरने की।''[3] इस तरह 'इदन्नमम' में मंदा और मकरंद का प्रेम मूल्यवान वस्तू भावना के रूप में चित्रित होते हुए कथा में मंदा और मकरंद की कहानी के माध्यम से मनुष्य जीवन में संकटों और स्वार्थ से उपर उठने का एक सशक्त माध्यम के रूप में 'प्रेम' भावना का महत्व स्थापित किया गया है।

ब) 'इदन्नमम' में स्त्री-पुरुष विवाहबाह्य संबंध :- 'सेक्स' एक जैवीक आवश्यकता है। 'सेक्स' की पूर्ति के लिए प्राचीन काल से भारतीय समाज में विवाह संस्था की स्थापना

---

1. वेदप्रकाश अमिताभ, 'आंचलिक उपन्यासों में मूल्य संक्रमण', वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र. सं. 1997, पृ. 60.
2. मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम', किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवा संस्करण - 2006, पृ. 245.
3. वही, पृ. 246.

हुई दिखाई देती है। स्त्री-पुरुष विवाह के बंधन के रूप में स्विकार करते हुए नैतिक धरातल पर सहजीवन जीते हुए कामजीवन का अधिकार प्राप्त करते है जिससे मनुष्य की चरित्रता अंकित की जाती है, क्योंकि विवाह के बाद स्त्री और पुरुष दोनों को अपने शील और मर्यादा का पालन करना होता है। पति-पत्नी का रिश्ता वफादारी पर आधारित होता है जिसमें प्रेम, स्नेह को अत्यंत महत्व होता है। परंतु आज परिवार में प्रेम, स्नेह अपनेपन की भावना लुप्त सी होती जा रही है। स्वार्थ, विलासिता, भोगवादि प्रवृत्ति के कारण समाज में अवैध-संबंध स्थापित हो रहे है। तो दुसरी तरफ स्त्री गरीबी, आर्थिक पराधीनता के कारण अवैध संबंध बनाती नजर आ रही है।

'इदन्नमम' में कुसुमा भाभी को अपने पति यशपाल से प्रेम, स्नेह नहीं मिलता तो वह रिश्ते से ससुर रहे अमरसिंह (दाऊजी) के साथ अवैध संबंध स्थापित करती है। पुरुष की तरह स्त्री को भी कामपूर्ति की आवश्यकता होती है इस अपने अधिकार को जताती कुसुमा भाभी कहती है -

"भाभी ये रीति-रिवाज तो उन्होंने ही बनाए हैं, जिनिने ये किताबे लिखी हैं, जिनके ऊपर ये किताबें लिखी गई है।"

"गलत बनाई हैं मन्दा। एकदम पच्छपात से रची हैं।"

"बताओ तो अगिनसाच्छी घर के गाँठ बाँधने का क्या मतलब?"

"पति और पत्नी को साथी-सहचर कहें तो विरथा है कि नहीं?"

"कितेक उलटा है बिन्नू, बेअरथ! यहसंबंध बड़ा थोथा है।'

"लो, एक तो खुंटे बंधा पांगुर, दूसरा सरग में उड़ता पंछी!"

"ढोर और पंखी सहचर नहीं हो सकते मन्दा।"[1]

भारतीय समाज में पुरुष अगर अवैध संबंध रखता है तो उसे पौरुश कहकर टाल दिया जाता है। परंतु स्त्री अगर अवैध संबंध रखती है तो उसे अनैतिक, बदचपन करार दिया जाता, इस नियम का यहाँ धिक्कार लेखिका ने कुसमा के माध्यम से किया है। डॉ. राधा गिरधारी लिखते है - "पुरुष नारी के प्रति कितना भी असभ्य व्यवहार करे या अनैतिक बन जाये उसकी ओर कोई उँगली नहीं उठाता। नारी यदि मर्यादा का उल्लंघन कर ले तो वह अनैतिक करार दी जाती है।"[2] बिल्कुल विरोधी नियमों के बनने के कारण स्त्री विद्रोह तो नहीं कर पाई थी

1. मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम', किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवा संस्करण - 2006, पृ. 83.
2. डॉ. राधा गिरधारी, 'राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में व्यक्ति और समाज', चंद्रलोक प्रकाशन, कानपुर, प्र. सं. 1975, पृ. 72.

परंतु अपने इच्छाओं को अतृप्त न रख पाने के कारण समाज में अवैध-संबंध रहते ही है। मंदा की माँ (प्रेम) विधवा होने पर गांव के अनेक लोगों से अवैध-संबंध रखती है जिसके बारे में जगेसरा बऊ को बताता है - ''उमाना(नाप) देती थी प्रेम भौजी मगन को। इंच-इंच नपवाती थी देह। क्या गजब का जीवन था। मगन ही क्यों, रामरतन कोरी के संग देख लो। तला के पास बबूल के झुंडों में अपनी आँखों से देखा है दोनों को। अपन तो घबरा के आँखे मीचली भइया।''[1] अपनी छोटी उम्र में विधवा हुई प्रेम गांव के पुरुषों से अवैध संबंध रखती है और अंत में अपने जीजा रतन यादव के साथ भाग जाती है। स्त्री को जब प्रेम, स्नेह नहीं मिलता तब वही स्त्री अवैध संबंधों कि तरफ आकर्षित हो जाती है। इस सत्यता को यहाँ लेखिका ने स्पष्ट किया है।

भारतीय समाज में पति-पत्नी के रिश्ते को पवित्र रिश्ता माना है फिर भी समाज में भोगवादी प्रवृत्ति के पुरुष अवैध संबंध रखते दिखाई देते है। भारतीय समाज में तो राजा-महाराजाओं के साथ-साथ सरंमजाम-जमींदार के भी जनानखाने रहने के उदाहरण है। 'इदन्नमम' में लाचार, गरीब, आर्थिक विपन्नता के कारण बने अवैध संबंधों में लिला राउतीन और गणेशी, जगसेरा और अहिल्या का उदाहरण है। भोगवादी जगसेरा अपनी लडकी के उम्र की अहिल्या के साथ अवैध संबंध रखता है। पत्नी के रोक लगाने पर उसे मार-पीट करता है और खुद पहाड पर जाकर रहने लगता है - ''नई टपरिया बनवाई जगेसर ने।

वे पहले दिन ही लाल रंग की साड़ी और उसी रंग का रेशमी ब्लाउज बनवा लाये। सुनहरी जोर लगवाने का मन था, लेकिन अहिल्या की स्निग्ध देह में जरी चुभ जाने की आशंका से विचार त्याग दिया।

अहिल्या राजरानी थी। वह जो माँगे वही हाजिर, जो चाहे वही पूरत।''

जगसेर पूरे दिन टपरिया से न निकलते। शराब पीना उनके मित्र अभिलाख ने सिखा ही दिया था। सुरा और सुन्दरी दोनों के मद में डूबे अहिल्या के नयनों से नयन जोड़े, अंग से अंग मिलाये, उसका साथ करते रहे।''[2] इस तरह गरीबी के कारण स्त्री का अवैध संबंध रखना 'इदन्नमम' में मैत्रेयी पुष्पा ने अहिल्या के उदाहरण के माध्यम से स्पष्ट किया है।

---

1. मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम', किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवा संस्करण - 2006, पृ. 126.
2. वही, पृ. 239.

क) 'इदन्नमम' में बलात्कार की समस्या :- सृष्टी कर्ता ने स्त्री और पुरुष इन दो ही मानव जातियों का निर्माण किया। दोनों को जीवन जीने का समान अधिकार प्रदान किया। परंतु इतिहास बताता है कि पुरुषों ने स्त्रियों को समानाधिकारीणी नहीं बनने दिया। भारत में तो पुरुष प्रधान संस्कृति रही है। भारतीय समाज में नारी का जीवन चुल्हा-चौका, परिवार तक सीमित था। आधुनिक युग में संविधान ने उसे बराबर का हक्क प्रदान जरूर किया है, शिक्षा को हासिल किये नारी का सम्मान समाज में जरूर बढ़ा है परंतु आज स्त्री एक भोग की वस्तू है। इसी दृष्टिकोन से देखने की दृष्टि बदली नही है जिसके कारण आधुनिक समाज में भी स्त्री पर शारीरिक अत्याचार होते आ रहे है। आशारानी व्होरा कहती है - ''संवैधानिक स्वतंत्रता व समानता के बावजूद भी यह आजादी और यह सम्मान केवल मुठ्ठी भर महिलाओं के लिए ही है। सामान्य नारी आज भी उतनी ही पिछडी व धडी हुई है और उतनी ही असुरक्षित है।''[1] भारत में परम्परा से सेठ, साहुकार, पुँजिपतियों द्वारा गरीब, मजदूर, आर्थिक विपन्न स्त्री पर अत्याचार होते रहे है। आज भी भोगवादी वृत्ति शिकार बनती नारी का चित्रण मंदा के माध्यम से प्रस्तुत होता है। ओरछा की गढ़ी से मंदा को लेकर कुसमा भाभी अपने सौतन का मैयका बिरगांव भरत मामा के यहाँ आती है। वहाँ कैलाश मास्टर द्वारा मंदा पर बलात्कार किया जाता है।

सेठ, साहूकार, पूँजिपतियों से आज मील मालिक, कारखानदइार बने लोग भी गरीब मजदूर स्त्रियों का शोषण करते है। 'इदन्नमम' में अभिलाख ठेकेदार अपने ही मित्र जगसेरा की लडकी को सगुणा को बहु बनाने का वचन देकर उसके घर रात में आकर सगुणा पर बलात्कार करता है। इसके साथ-साथ पहाड पर काम करनेवाली राउत मजदूरिनीयों का भी शारीरिक शोषण करता रहता है। आज के शिक्षित समाज में भी भारतीय स्त्री सुरक्षित नहीं है बल्कि शिक्षित कैलाश मास्टर ही मंदा पर बलात्कार करता है, इस उदाहरण के माध्यम से मैत्रेयी पुष्पा ने अपने ही घर में स्त्री का जीवन किस तरह असुरक्षित है इस बात की ओर संकेत किया है।

3.2.7 'इदन्नमम' में राजनीति का चित्रण :- आजादी के बाद भारतीय जनता ने रामराज्य का स्वप्न देखा था। हमारी अपनी सरकार होगी, समाजवादी विचार लेकर देश का कारोबार चलेगा, सबको समान अधिकार प्राप्त होगा इस विचार से भारतीय जनता आनंदीत थी। परंतु

---

1. आशारानी व्होरा, 'नारी शोषण : आईने और आयाम', नेशनल पब्लिकेशन हाऊस, दिल्ली, प्र. सं. 1982, पृ. 231.

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

स्वतंत्रता ने कुछ साल बाद भी नेता लोगों ने अपने स्वार्थ के लिए राजनीति को भ्रष्ट कर दिया। परम्परा से राजा-महाराज, सरंमजान रहे लोगों के हाथ में ही सत्ता चली गई। परिणाम स्वरूप भारतीय समाज की परिस्थिति वही की वही रही। डॉ. रमेश देशमुख कहते है - ''देश में बहुमुखी राजनीति का पतन हुआ है, उसने नैतिकता के सभी मूल्य स्वस्त कर दिए। अब जनता के सभी मसलें, चाहे वे रोटी के हों, चाहे धर्म के वोट की नीति से तय होने लगे। सत्ता द्‌वारा भ्रष्टाचार और दुश्चरित्रता के संरक्षण एवं अपराध तथा राजनीति के गठ जोड़ ने जनजीवन में असहायता और असुरक्षा की भावना भर दी। वोट की राजनीति में संकीर्ण जातिवाद और गुटबंदी को भरपूर प्रश्रय दिया। परिणामस्वरूप जनता का विश्वास सभी प्रकार की संवैधानिक रक्षात्मक इकाइयों से उठ गया।''[1]

आजादी के बाद देश में समाजवाद का नारा लगाया गया। समाज में आर्थिक समानता लाने के लिए सरकार ने अनेक विकास योजनाओं का प्रलोभन जनता के सामने रखा। भारत सरकारने अनेक योजनाओं का निर्माण करते हुए समाज का विकास करना चाहा परंतु स्वार्थी नेता लोगों ने देशवासियों के साथ खिलवाड किया, उनकी करनी और कथनी में अंतर होने लगा। विकास योजनाओं का पैसा हड़पने के लिए नेता और अफसर लोगों में साठ-गाँठ होने लगी जिसके माध्यम से सामान्य लोगों का शोषण हो रहा है। 'इदन्नमम' में मैत्रेयी पुष्पा ने वर्तमान राजनीति का चित्रण प्रस्तुत करते हुए भ्रष्ट, स्वार्थी नेता लोगों का वर्णन करते हुए गंदी राजनीति के कई रूप चित्रित किये है -

'इदन्नमम' में 'सोनपुरा' गांव में विकास योजना के माध्यम से पहाड पर क्रैशर लगे है, जिस कारण वहाँ के लोग विस्थापित हो चुके है परंतु वह अपना गांव छोडकर जाना नहीं चाहते वही रहकर वह गुजर-बसर कर रहे हैं। वहाँ के लोगों के जीवन की समस्याओं पर नेता लोग ध्यान नहीं देते सिर्फ चुनाव के समय वोट माँगने आये राजासाब के सामने मंदा अपने गाँव की स्थिति का वर्णन करती है - ''यह हमारा अस्पताल ... कोई डॉक्टर नहीं यहाँ, दवायें नहीं, हारी-बीमारी के निवारण की कोई सुविधा नहीं। इस अस्पताप से तबाह ही हुए हैं हम और इस अस्पताल की झूठी आशा-उम्मीद ने अब तक जिताया है आप को।''[2]

---

1. डॉ. रमेश देशमुख, 'आठवें दशक की हिन्दी कहानी में जीवन मूल्य', विद्या प्रकाशन, कानपुर, प्र. सं. 1994, पृ. 146.
2. मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम', किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवा संस्करण - 2006, पृ. 307.

मैत्रेयी पुष्पा ने राजनीतिक लोगों के स्वार्थी स्वभाव का चित्रण किया है - ''उठकर जाना चाहती थी, मगर मन कड़ा कर लिया। बैठी रही। आँखों ही आँखों में पीती रही आँसूओं को। टपकने नहीं दिये। क्यों - टपकने दें? कठिन घड़ी में भावुकता और आँसू की नहीं, हिम्मत-हौसले की कीमत होती है। फिर राजासाब कोई घर-संबंधी तो हैं नहीं, निलिप्त राजनेता हैं, जिन्हें सुख-दुःख, प्रेम-घृणा, दया-करूणा, मोह-माया नहीं व्यापती। उन्हें वोट, कुर्सी, पद ऐसे दिखाई देते हैं, जैसे अर्जुन को चिड़िया की आँख।''[1]

आज राजनीतिक नेता लोग अपने स्वार्थ के लिए सरकारी अफसरों को साथ लेकर जनता पर अन्याय-अत्याचार कर रहे है। 'इदन्नमम' में गुबरैला राउत मजदूर मंदा को बताता है - ''अफसर की अगाई और घोड़ा की पिछाई कहाँ नों करे आदमी? आगई काटी थी हमने, ऐन तो काटी थी, जब जंगलों से खदेरे गये थे। अपने पेड-रूखों से जुदा कर दिया था, जब जंगलों से काटकर फेंके तो मुरझाते हुए भी तीर, लाठी, बलम लैकें जूझ परे थे हम। हार नहीं मानी थी। किसी तरियाँ। पर अन्त में क्या बना? क्या मिला? पुलिस ने मार-मारकर घुटने फोर दिये। भेजा चली बना दिया, बन्द को की मार से घिस-घिसकर। जो बचे थे, वे ठूंसे दिये जेहल में। हमारी पैरोकारी किसी ने नहीं की। किसी ने नहीं गिने कि कितने भर गये? कोई नहीं आया मदत-सहायताके लिए।''[2]

स्वार्थी नेता और भ्रष्ट अफसरों के विरुद्ध आज समाज में आवाज उठ रही है। 'इदन्नमम' में सोनपुरा और आस-पास के गांववाले चुनाव में वोट न देने का निश्चय करते है, जिसका परिणाम सोनपुरा गांव वालों को भुगतना पडता है। सोनपुरा गांव से डॉ. इन्द्रनील का तबादला राजा साब कर देते है।

''मन्दा, तुम्हीं बोलो, डाक्टर क्या करते? चुनाव नजदीक आ गया। राजा साब गाँव-गाँव फिर रहे हैं। उन्हीं का औंडर मिला था कि चौबीस घंटे के भीतर सोनपुरा का चार्ज छोडकर समथर के पास घास बेल-बॉकला पहुँचो। जाना पड़ा। नाहीं तो नहीं कर सकते थे। हुकूम उदूली की गुंजाइश ही कहाँ थी? राजा साब की आज्ञा टालना हँसी-खेल नहीं है। वे विधायक ही नहीं, प्रदेश के मंत्री है। आगे भी पर-प्रतिष्ठा बनाये रखने की हैसियत रखते है।''[3] यहाँ

---

1. मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम', किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवा संस्करण - 2006, पृ. 307.
2. वही, पृ. 307.
3. वही, पृ. 351.

राजासाब एक अवसरवादि नेता के रूप में चित्रित है। सोनपुरा और आस-पास के गांव के वोट नहीं मिलेंगे यह देखकर वह सोनपुरा गांव के डॉक्टर का तबादला करके जिस क्षेत्र के लोगों के वोट मिलनेवाले है वहाँ डॉ. इन्द्रनील का तबादला कर देते है।

वर्तमान राजनीति में स्वार्थी, भ्रष्ट राजनेता लोग सत्ता हासिल करने के लिए जाती-पाती, धर्म के नाम पर राजनीति खेल रहे है। 'इदन्नमम' में 6 दिसंबर 1992 में अयोध्या में बाबरी मशीर ढहाने पर फैले साम्प्रदायिक दंगे-फसाद का चित्रण आया है, जिससे शहर ही नहीं भारत का गाँव-गाँव प्रभावित हुआ था। 'इदन्नमम' में चित्रित श्यामली गाँव की एकात्मता इसी हादसे के कारण खण्डीत हो जाती है - ''बड़े-बूढ़ों ने तो थूका भी कि कौन सिर्री हुआ है, जो पराई जगह अपने देवताओं को पथरा रहा है। अपने मन्दिरों में क्या जगह नहीं है? पर उनकी सुनें कौन? सुनै भी तो समझे कौन! रेडियो, टेलिविजन के सुननेवाले अपने बडे-बूढ़ों की बात सुनैंगे भला?''

''हल्ला मचा कि मसजिद ढहाई सो मुसलमानों ने हिन्दुओं को मारा है, काटा है।''

''चलो हम भी मारेंगे मुसलमान, काटेंगे उनके सिर, हाथ-पाँव। बस, जिसके हाथ में जो आया ले-लेकर निकल पड़े। नथू, पन्नी माते का मौंडा धनसिंह, अपने पिरकास लै-लै लट्ठ पहौंच गये चीफ साब के दुआरें। पल्ले परा के अर्जुन, भगवानसिंह, रामभरों से हुनैं आ गये फरुआ लै, लै कै।''

''चीफ साब के दरवाजे पर ऐन गारी-मारी दीं। अल्ला-खुदा को गरियाया। ऐन चीख-चिल्लाहट मची।''[1] इस तरह राजनीति के कारण भारतीय समाज, गाँव-गाँव धर्म-जाती के नाम पर विच्छेदीत कर देश की एकता, शांती नष्ट हो रही है।

आज के वर्तमान राजनीति में गुटबाजी के कारण सामान्य लोगों में आये-दिन झगडे होते रहते है। स्वार्थी नेता लोग अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिये गुटबाजी करते हुए सामान्य जनता को फुसला रही है, नेताओं के बहकावे में आकर गुट-गुट में झगडें शुरू रहते है। 'इदन्नमम' में मंदा के पिताजी की हत्या गुटबाजी के कारण ही हो जाती है। ''ऐन भगदड़ मची थी कुचल-पिचल कें दो बच्चा मर गये। गोपालपुरा के दसई बसोरे और पल्लू कोरी ने

---

1. मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम', किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवा संस्करण - 2006, पृ. 254.

भी प्रान ताज दिये। उन्हें गोली मारी और अन्त में महेन्दर को गोली ।''[1] राजनीति में बढ़ती गुटबंदी के कारण सच्चे समाज सेवक महेंदर की हत्या हो जाती है, इस बात की ओर लेखिका ने संकेत किया है।

निष्कर्ष :- आज राजनीति स्वार्थी और भ्रष्ट लोगों के हाथ में चली गयी है। राजसत्ता हासिल करने के लिये झूठे आश्वासन देना, धर्म-जाती के नाम पर समाज में विभेद करना, देश की एकात्मता को खण्डित करना और सत्ता हासिल करने पर सामान्य जनता पर अन्याय-अत्याचार करना इस प्रकार का राजनीति वातावरण 'इदन्नमम' में मैत्रेयी पुष्पा ने चित्रित किया है जो यथार्थवादी हैं।

3.2.8 'इदन्नमम' में 'विवाह' से संबंधित समस्या :- विश्व में भारतीय संस्कृती सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है क्योंकि भारतीय समाज में आदर्श मानव जीवनयापन के लिये नीति-नियमों से बद्ध अनेक संस्थाओं का निर्माण किया गया था, जैसे गुरूकुल शिक्षण पद्धति, विवाह संस्था आदि। इन्हीं संस्थाओं के माध्यम से समाज के सदस्यों पर संस्कार किये जाते थे जो एक सुसंस्कृत समाज की निर्मिति हो गई थी। परिवार को संभालने स्त्री-पुरुष को विवाह के माध्यम से पति-पत्नी के रिश्ते में बांधकर समाज में नैतिक मूल्यों का जतन किया जाता था। स्त्री-पुरुष के कामपूर्ति के लिये विवाह संस्था के माध्यम से पति-पत्नी के रूप एकत्रित आये स्त्री-पुरुष परिवार का हिस्सा बनकर परिवार के सदस्यों का खयाल रखना, वंश वेल बढ़ाना उनका कर्तव्य रहता था। आदर्श नैतिक मूल्यों पर आधारित विवाह संस्था का महत्त्व प्राचीन काल से लेकर आज भी अत्यंत आवश्यक और कायम है। डॉ. रमेश देशमुख जी ने विवाह की परिभाषा इस प्रकार दी है - ''विवाह संस्था सामाजिक ढाँचे का मेरूदण्ड है। भारतीय संस्कृति में विवाह सामाजिक समझौता मात्र नहीं, अपितु एक धार्मिक संस्कार है। विवाह का उद्देश्य केवल शारीरिक नहीं आध्यात्मिक भी है। विवाह को दो आत्माओं का मिलन कहा जाता है।''[2]

उपर्युक्त परिभाषा से यह स्पष्ट होता है कि विवाह मात्र संस्कार नहीं है, बल्कि स्वस्थ समाज की नींव विवाह संस्था ही है। भारतीय समाज में विवाह संस्था को अत्यंत महत्त्व जरूर है परंतु इस विवाह संस्था में अनेक कुप्रथाएँ प्रचलित है - बालविवाह, अनमेल विवाह, अनेक विवाह आदि। 'इदन्नमम' में बालविवाह समस्या का चित्रण आया है -

---

2. डॉ. रमेश देशमुख, 'आंठवे दशक की हिन्दी कहानी में जीवनमूल्य', विद्या प्रकाशन, कानपुर, प्र. सं. 1994, पृ. 96.

1. मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम', किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवा संस्करण - 2006, पृ. 26.

भारतीय समाज में बालविवाह की प्रथा प्राचीन काल से रही दिखाई देती है। इसके पिछे अज्ञान, धार्मिक अन्धविश्वास, रुढी-परम्परायें दिखाई देती है। आज विवाह की आयु स्त्री के लिए 18 वर्ष और पुरुष के लिये 21 वर्ष स्विकार्य है, क्योंकि बाल आयु में किए गये विवाह का अर्थ ही विवाहीत स्त्री और पुरुष समझ नहीं पाते है बल्कि उनके भविष्य के बारे में बिना सोचे समझे विवाह किया जाता है। 'इदन्नमम' में मंदा और मकरंद की सगाई बाल्यावस्था में ही तय की जाती है परंतु आगे संपत्ति के लालच में आये गोविन्दसिंह के कारण सगाई टूट जाती है और अंत में मंदा अविवाहिता के रूप में नजर आती है।

आदिवासी समाज में भी सदियों से बालविवाह प्रथा प्रचलित रही है और वह उचित भी मानी जाती है। लडकी घर की इज्जत मानी जाती है वह सयानी होने पर उसके गलत कदम न उठ जाये इस डर से भारतीय समाज में बालविवाह किये जाते है। धर्मशास्त्र के अनुसार तो कन्यादान श्रेष्ठदान माना जाता है समय से पहले लडकी के हाथ पिले करना समाज में पिता के लिए गर्व का कारण बनता है। परंतु बाल आयु में विवाह होने से आगे के जीवन में बालिका को अनेक समस्याओं से जुझना पडता है फिर भी परंपरा से चली आई यह परंपरा आज के आधुनिक भारत में प्रचलित रही है।

'इदन्नमम' में आदिवासी राउतोओं में चलनेवाले बालविवाह का वर्णन आया है - ''सात-आठ बरस का बच्चा उसके पाँवों पर झुक आया। उसने प्यार से बच्चे के कंधे थपथपाये, सिर पर हाथ फेरा ''दुल्हा हो तुम तो।'' हओ जिज्जि, दुल्हा है। हमारा दामाद। बलदेव।'' अवधा ने अपनी गुदना भरी बाँहे बच्चे की गरदने के गिर्द डाल दी। साँवलें होंठ सफेद दांतों पर फैल गये। अवधा विभोर से देखने लगी।''[1] अवधा अपने सात वर्ष किसिरी देवी की शादी तो तय करती है परंतु बारात में आए लोगों को खाना तक नहीं दे पाती। सब बाराती तालाब में उतरकर मछली, केकडे-मेकडे ढूंढने लगते है, उसे पकाकर बारातियों को खिलाया जाता है, परिणामस्वरूप उसी खाने में से विषीले जंतू का परिणाम होकर बारात में आये लोगों की मृत्यू हो जाती है, दुल्हा-दुल्हन भी मर जाते है।

---

1. मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम', किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवा संस्करण - 2006, पृ. 233.

''कलबाली बारात परसन के पौधों की तरह बिछी पड़ी है। लोग तडप रहे हैं। कुचले हुए केंचुओं की तरह बिलबिला रहे हैं। कुछ ऐसी लस्त-पस्त देहें, जिनमें बिलबिलाने का सत भी नहीं बचा।

दस्त, उल्टी, मूर्च्छा, बीमारी और मौत के शिकंजे में जकड़ा कलवाला उत्सवी समूह।

वह घबराकर वहाँ धरती पर बैठ गयी। दोनों हाथों में अपना सिर थाम लिया। अब? एरच ले जाना होगा इन्हें? निगाह दाहिने हाथ को गयीं तो मूर्छा आने लगी उसे - ठीक सामने सिरी देवी और बलदेव बिखरे पड़े थे - मृत। अवधा की आंखे पथरायी हुई - निर्जीव सी।''[1]

इस तरह परम्परा हो, प्रतिष्ठा हो या आर्थिक विपन्नता के कारण हो आदिवासी लोग कर्जा लेकर, व्याज पर पैसे लेकर बच्चों के बाल आयु में ही विवाह कर देते है।

भारत के ग्रामीण समाज में आज भी अज्ञान, अशिक्षा, अंधविश्वास, पैसों का लालच आदि कारणों से बाल आयु में ही बालिका का विवाह किया जाता है, चाहे दुल्हा उम्र से उससे बड़ा क्यों न हो। स्त्री को भविष्य में कितनी समस्याओं को झेलना पडे पर उसे विवाह की वेदी पर बाल उम्र में ही चढाया जाता है। इस तरह मैत्रेयी पुष्पा ने 'इदन्नमम' में मंदा-मकरंद, सिरीदेवी-बलदेव, सगुणा की शादी बाल आयु में ही तय की हुई दिखलाकर भारतीय समाज में आज भी बाल विवाह प्रचलित है इस यथार्थ को सामने लाया है।

3.2.9 'इदन्नमम' में धर्म और संस्कृति का चित्रण :- भारतीय समाज में धर्म का अत्यन्त महत्त्व है। धर्म के आधार पर यहाँकि सामाजिक व्यवस्था बनी थी, परिणामस्वरूप आज के संगणकीय युग में भी धर्म का महत्त्व भारतीय समाज में कायम है। भारतियों के जीवन में हमेशा धर्म प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में साथ रहा है। विश्वभर में अनेक धर्म रहे है जिनके मूल में 'मानवकल्याण' यह मूल धारणा रही है। मनुष्य जीवन के साथ चलने वाला धर्म का रूप प्राचीन काल से आज तक कभी सहाय्यक तो कभी विघातक रूप में कार्यरत रहा दिखाई देता है। भारत में विविध धर्म-जाती के लोग रहते है। स्वतंत्रता के बाद भारतीय संविधान ने धर्मनिरपेक्षता को स्विकार किया है। मानव जीवन में धार्मिक उत्सवों का अनन्यसाधारण महत्त्व है - मानव मन के उल्हास, आनंद को व्यक्त करते के लिए कई धार्मिक उत्सव मनाये जाते

---

1. मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम', किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवा संस्करण - 2006, पृ. 236.

है। फिर भी धर्म के नाम समाज में अशांति फैलाने वाली शक्तियाँ भी कार्यरत है जिससे समाज स्वास्थ्य बिगडता जा रहा है। 'इदन्नमम' में धर्म के सहाय्यक और विघातक दोनों रूपों का चित्रण प्रस्तुत होता है -

'इदन्नमम' में चित्रित 'श्यामली' गांव एकात्मका का प्रतिक है। भौतिक युग में धर्म, जाति के नाम पर नहीं तो मनुष्य के कर्म पर उसकी पहचान बनती इस विचार के मानवतावादी दादा पंचमसिंह, मोदी लल्ला और चीफ साहब यह तीनों अलग-अलग धर्म के होते हुए भी श्यामली गांव की एकात्मता को बनाये रखे है। दादा पंचमसिंह के आंगन में सभी जाति-धर्म के लोग एकत्रित होकर भजन-कीर्तन करते हैं।

'इदन्नमम' में मंदा की माँ द्वारा केस करने पर उसे पुलिस पकडने आयेगी इस डर से उसे दुसरी जगह में छिपाने की बात आती है तो मंदा को चिफ साहब के बहन के घर समथर गांव भेजा जाता है जो परिवार मुस्लिम धर्मिय है, वहीं रक्षाबंधन के त्यौहार का वर्णन करते हुए धार्मिक सहिष्णुता का सुंदर उदाहरण दिखाई देता है -

''रक्षा बंधन है आज।

राखी और भुँजरियाँ का त्यौहार।

अनवरी बुआ सुबह-सवेरे ही शकील को लेकर आ गयी।

नन्ही-सी काली शेरवानी पहनी है शकील ने और चीफ काका के पाजामा जैसा ही छोटा-सा सफेद पाजामा। सिर पर हरी जाली की नन्ही-सी दुपिया।

माँ ने समझाया, ''मौहल्ले में जाये तो कहना कि पाकिस्तानवाली जिज्जी ने बाँधी है।''

''अम्मी, जिज्जीवाला जोड़ा हमारे हाथ में पकडाओं। हम दें गे आप नहीं।'' वह जिद करने लगा।

मन्दाकिनी ने कपड़ों का पैकेट वहीं खोल डाला।

गरमा कुर्ता! सितारोंवाली गुलाबी चुन्नी।

देखते ही वह हिरन हो गयी। हाथ में लेकर छाती से चिपकाये हुए ऊपर-नीचे कुलाँचे भर आयी। शकील पीछे-पीछे भागता रहा।

शकील को खूब चूमा। खूब चूमा।

"अनवरी बेटा ...." बऊ ने बुआ को छाती से लगा लिया।

बऊ की आँखे नम हो गयी।"[1]

'इदन्नमम' में जातीय एकात्मता, धार्मिक सहिष्णुता का जीतना सुंदर चित्रण आया है उतना यथार्थ चित्रण आज के राजनीतिक लोगों द्वारा धर्म का विघातक शक्ती के रूप में उपयोग करते हुए समाज में धार्मिक दंगे-फसाद का वर्णन भी दृष्टव्य है - "लोग फउआ से मसजिद ढहाने लगे।

"मिठू ने शदबद दी सो पहौंचे दादा के पास। सारा किस्सा हाँफते-हाँफते पलभर में सुना डाला।"

"दादा कहाँ झुकने वाले थे। तुरन्त भागे और फउआ पकड़ लिया।"

"पर लोग कहाँ माने । दादा को एक कनायें ढकेलकर लगे रहे गिराने में। और फिर आये तो दरवाजे की किबाडों पर टूट पडे। बखरी के भीतर भाभीजान, अम्माजान रोने लगीं। ऐन नट्टाये मचने लगे। जैसे बकरियों का झुंड एक साथ कतल कर दिया हो किसी ने। इसी तरह की दिल हिलाने वाली चिल्लाहट।"[2]

भारत विविध संस्कृति से संपन्न देश है। विविध धर्म-जाति के लोग एक साथ रहते हुए अपनत्व से सुख-दुःख बाँट लेते है, समाज में धार्मिक दंगे-फसाद क्योंन होते हो, परंतु सामान्य इन्सान धर्म से बढ़कर सच्ची मानवता पर भरोसा करते हुए अपनत्व, एकता का नाता बनाया रखते हुए एक दुसरे के धार्मिक तीज-त्यौहार में शामिल होकर आनंद मनाता है, जिससे समाज में सद्भावना, प्रेम, सामाजिक एकता बनी रहती है।

'इदन्नमम' में सोनपुरा गांव में मनाई जा रही 'दीपावली' का वर्णन दृष्टव्य है -

"दीपावली आ गयी।

चारो ओर जगमग है। लिपे-पुते घरों में प्रसन्न और उतावले बच्चे। पॉपलीन की कमीज, पाजामा में सजे-बजे। छोटी-छोटी गुडिया-सी बटियाँ रंग-बिरंगे फ्रॉक पहने हुए।

---

1. मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम', किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवा संस्करण - 2006, पृ. 39.
2. वही, पृ. 255.

छिगुली-उँगली सी पतली चोटी में रंग-बिरंग रिबन। रंगीतन पिन बालों में सितारों की तरह चमक रहे हैं। फ्रॉक की झोली में खालें, बताशे।

लोग प्रमुदित और आनन्दित।

घरो में, गलियों में, धरती पर, आकाश में, सोनपुरा की दसों दिशाओं में दीपावपी जगमगा उठी है, दिनके उजियारें में ही।

और ढम-ढमाढम ! ढोल बजा।

टिन टिना टिन ! मंजीरे बोले।

टुउँ, टुउँ, टुउँ ! रमतुला बोला।

तुरही और मृदंग की मिली-जुली लय। सुर! ताल! झूम रहे हैं लोग। गा रहे हैं गवइया और नाच रह हैं नचइया।''[1]

इस तरह 'इदन्नमम' में भुजुरियाँ, रक्षाबंधन, फागुन के दिन होली और दिपावली आदी त्यौहारों का वर्णन आता है।

भारतीय समाज में परम्परा से लोककलाओं का जनमानस में विशिष्ट और महत्त्वपूर्ण स्थान है। हस्तकला, चित्रकला, संगीत, नाच-गाना आदि के माध्यम से लोग अपनी भावनाओं, सामाजिक रीति-रिवाजों, संस्कृति का जतन करते आये है। साथ ही लोककलाये व्यक्तियों के भावनाओं को व्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम है। सुख-दुःख, आनंद, उल्हास सभी भाव भावनाओं को लोककला के माध्यम से वाणी दी जाती है। परंतु आज पाश्चात्य संस्कृति के परिणामस्वरूप आज बढते रेडियो, टेलिव्हीजन के प्रभाव के कारण समाज से लोकसंस्कृति नष्ट हो रही है। परंतु भारतीय ग्रामों में आज भी तीज-त्यौहारों के समय लोकसंस्कृति के दर्शन होते है। आज भारतीय समाज से लोककला में किस तरह नष्ट हो रही इसका वर्णन 'इदन्नमम' में कोयल के महाराज के मंतव्य से स्पष्ट हो जाता है - ''अब लोक चित्रकला में तो देखने को मिल जायें, वही बहुत। कहाँ मुनी भीतें रखनाअसगुण माना जाता था, परन्तु अब कौन परवाह करता है। हस्तकला का लोप ही समझो। कहने को दिल्ली-लखनऊ में बुलाये जाते हैं लोक चित्रकला वाले लोग और हस्तकला वाले भी। लेकिन क्या मिलता है उन्हें और कितने जा पाते

---

1. मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम', किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवा संस्करण - 2006, पृ. 311-312.

हैं वहाँ? यहाँ ऐसे -ऐसे चित्रकार भूखे मरते हैं। पता नहीं ये राजनेता या सरकार क्यों अंधरे में रखती है इन्हें?''

''महाराज, हमें तो अपनी दुश्मन दीखती है सरकार। जैसेतबाह करने पर तुली हो। नहीं तो विध्यांचल की पहाडियों में बसे गाँवों में कैसे-कैसे तो कलाकार हैं। नाचनेवाले ऐसे कि देखते रह जाओ।''[1]

मैत्रेयी पुष्पा ने 'इदन्नमम' में लोककलाओं का वर्णन करते हुए अपनी भूमी बुंदेलखंड की संस्कृति की उज्ज्वल परम्परा का परिचय करा देने के साथ-साथ लोककलाओं का आज के वर्तमान काल में नष्ट हो जाने का भय भी व्यक्त किया है। सरकार दरबार से लोककलायें जीवित रखने के लिये प्रयास जरूर किये जाते है परंतु सरकार की तरफ से लगाई प्रदर्शनी, मेलों में सभी कलाकार पहुँच नहीं पाते और इस तरह आज भारत के विविध प्रदेशों, क्षेत्रों में स्थित लोककलाओं का नष्ट हो जाना भारतीय संस्कृति के लिये घातक है, इस ओर अपने विचार व्यक्त करते हुए वेदप्रकाश अमिताभ कहते है - ''औद्योगिकरण और मशीनीकरण ने लोक पर्वों को नष्ट और पुराने मूल्यों को आहत किया है लेकिन एक दुष्प्रभाव यह हुआ है कि मनुष्य की प्रवृत्तियों और आवेगों पर से मूल्यों का नियंत्रण हट गया है। लोकपर्वों और त्यौहारों के कम होते जाने से इन आवेगों के उदात्तीकरण की प्रक्रिया भी अवरुद्ध हुई है।''[2] इस तरह 'इदन्नमम' में भी मैत्रेयी पुष्पा ने बढ़ते औद्योगिकरण और भौतिकवादी जीवनशैली के कारण टूटती लोकसंस्कृति और बदलते मूल्यों के साथ तीज-त्यौहारों का बदलता रूप श्यामली गांव में खेली जाने वाली होली के त्यौहार के माध्यम से चित्रित किया है। आज तीज-त्यौहारों ने असभ्य, भयानक रूप लिया है, होली, नवरात्र, गरबा आदि के समय नैतिक मूल्यों का ऱ्हास होनेवाले चित्र समाज में सामने आ रहे है। जिससे त्यौहारो से मानव जीवन में आनंद, उल्हास निर्माण किया जाता था। वही नास्ती मूल्य पनपने लगे है, पर्वों का स्वरूप बिगडता जा रहा है।

निष्कर्ष :- 'इदन्नमम' में चित्रित धर्म, संस्कृति के माध्यम से हमारे समाज में रहे रीति-रिवाज, परम्परायें, सभ्यता, एकता, साम्प्रदायिक सद्भावना का दर्शन एक तरफ हो जाता है

---

1. मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम', किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवा संस्करण - 2006, पृ. 312.
2. वेदप्रकाश अमिताभ, 'हिन्दी के आंचलिक उपन्यासों में मूल्य-संक्रमण', वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र. सं. 1997, पृ. 146.

तो समकालीन समय में स्वार्थी लोगों के माध्यम से भारतीय संस्कृति को भ्रष्ट करने का कार्य भी हो रहा है जिसके लिये धार्मिक, जातिय शक्तियाँ कार्यरत है। इस बात का सोदाहरणासह चित्रण मैत्रेयी जी ने करा दिया है। परंतु सदियों से विविधता को लेकर एक-साथ जीनेवाले भारतीय जनमानस पर विघातक शक्तियाँ हावी नहीं हो सकती है। यह देश हमेशा एकता का प्रतिक रहेगा यह आशा लेखिका ने यहाँ व्यक्त की है।

3.3 उपन्यास का शीर्षक :-

'इदन्नमम' शीर्षक संस्कृत भाषा का शब्द है। जिसका अर्थ मैत्रेयी पुष्पा ने उपन्यास में दिया है -

ओ इम् भूर्भुवः स्वः।
अग्मिनर्ऋषि पवमानः पांचजन्यः पुरोहितः।
तर्मामिहे महागयं स्वाहा।
इदमग्नये पवनाय। इंदं न मम।

(हे परमात्मन, तू सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, अन्तयामी है।
तू ही प्रजातंत्र का पुरोहित और पंचायत का प्रेरक है।
जिसका यशोगान कर विद्वान भव-बाधा से विमुक्त हो जाते हैं,
यह आहुति उसी परमेश्वर के लिए है, मेरे लिए नहीं।''
'इदन्नमम'

अर्थात - यह मेरा नहीं। जो कुछ मैं अर्पण कर रहा हूँ यह मेरा नहीं।''[1] 'स्व' को जनहित के लिए समर्पित करना 'इदन्नमम' है। प्रकृति सारे संसार का भार उठाते हुए समग्र जीव-जंतू का पालन-पोषण करती सम्पूर्ण उपादान देते हुए इस सजीव सृष्टि का चक्र चलाती रहती है। उसका समर्पण 'इदन्नमम' ही है तो इसी सृष्टि में रहने वाले मनुष्य दुसरों के लिये जीनेवाली प्रकृति का गुण आत्मसात करले तो समग्र मानव जाती सुखी हो जाती इसी उद्देश्य को स्पष्ट करने के लिए मैत्रेयी पुष्पा ने विशिष्ट अंचल प्रदेश का मनुष्य जीवन चित्रित करते हुए 'इदन्नमम' मंत्र की आवश्यकता को स्पष्ट किया है।

---

1. मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम', किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवा संस्करण - 2006, पृ. 191.
2. दृष्टव्य, 'परती-परिकथा', आलोचना, अक्तूबर, 1957.

धनंजय वर्मा के अनुसार आंचलिक उपन्यास की परिभाषा - ''लोकरंग को उभारकर किसी अंचल विशेष का प्रतिनिधित्व करनेवाली कृतियाँ आंचलिक उपन्यास कहलाती है।''[2] उपर्युक्त परिभाषा के अनुसार विशिष्ट अंचल में रहे लोकजीवन का, ग्रामीण अंचल में व्याप्त विषमताओं, विद्रुपताओं, समस्याओं और संधर्ष से ग्रस्त मानव जीवन समग्र मानव सृष्टी को बचाने के लिये 'इदन्नमम' मंत्र को उच्चारणा होगा।

'इदन्नमम' में चित्रित कथ्य में परम्पराओं, रूढियों, अंधविश्वास, जातिय-धार्मिक संघर्ष, किसान और मजदूरों का शोषण, स्वार्थी नेता लोग और भ्रष्ट सरकार, स्त्री-पुरुषों के अवैध सम्बन्ध, ग्रामजीवन में नशापान, वहाँ की धार्मिक-सांस्कृतिक स्थिति, औद्योगिकरण के कारण विस्थापन, विस्थापितों की समस्याएँ, सरकार विरोधी आन्दोलन, गाँव-परिवार में टूटनशीलता, नारी का शोषण और उसका अधिकार के लिए संघर्षरत होना आदि का चित्रण लेखिका ने बड़ी ईमानदारी, तटस्थता और मानवीय संवेदना के साथ सोनपुरा और श्यामली गाँव के माध्यम से बुंदेलखंड अंचल को दर्शाते हुए समग्र भारतीय गावों की आज की स्थिति का दर्शन कराया है। आज का मानव जीवन संघर्ष के पाशों में पीसता चला जा रहा है। समाज गरीबी और अमिरी इन दो वर्गों में बटता चला जा रहा है। औद्योगिकरण के नामपर सोनपुरा गांव में क्रैशर लगते है और गाँव का किसान विस्थापितों के जीवन की समस्याओं को लेकर जीता है, पहाडों पर वनों से भगाये आदिवासी राउत मजदूर जीवित रहने के लिये पत्तियाँ उबालकर, किडे-मकौडे खाकर जी रहे है। औद्योगिकरण के कारण खेती-बाडी छीन जाने पर रोजी-रोटी के लिए संघर्ष करता किसान और शोषण की पाशों में पीसनेवाले राउत मजदूरों का जीवन बिलबिलाते मानव जीवन का चित्रण प्रस्तुत करते हुए, उन्हें मानवाधिकार प्राप्त करा देने के लिए किसी न किसी को अपना जीवन इस अंचल के समृद्धी के लिए संघर्ष के हवन में समिधा बनाकर डालना ही होगा। तभी अंचल गांव का उद्धार हो सकता है।

'इदन्नमम' उपन्यास में नायिका मंदा, कोयले के मठ के महाराज (टीकमसिंह) और दादा पंचमसिंह इन आदर्श पात्रों के माध्यम से इस संघर्षरत अंचल जीवन के लोगों के जीवन को समर्पित होना उपन्यास कथ्य की आवश्यकता है। श्यामली गांव में गांधीवादी विचारक पंचमसिंह के संस्कारों में पली मंदा मठ के महाराज के विचारों से प्रभावित होकर अपने गांव सोनपुरा में अपने पिताजी का अधूरा स्वप्न अस्पताल शुरू करना इस उद्देश्य से प्रेरित होती

कार्यरत दिखाई देती है, परंतु उसे एहसास होता है अस्पताल से भी बढ़कर कई जरूरतों से यह गाँव कोसों दूर है। इस गाँव में फिर से खुशिहाली लानी हो तो अन्याय-अत्याचार के विरोध में जंग छेडनी होगी और इसके लिए 'इदन्नमम' का मंत्र वह अपना लेती है।

उपन्यास के अनुशंसा में राजेन्द्र यादव कहते है - ''महानगरीय मध्यवर्ग की संघर्ष करती और पांवों के नीचे जमीन की तलाश करती कथा - नारियों के बीच गांव की मंदा एक अजीब निरीह, निष्कवच, निश्चल, संकल्पदृढ नारी का व्यक्तित्व लेकर उभरती है। बाढ़के बीच धीरे-धीरे उगते टीले या दृविप की तरह, मगर वह दृविप नहीं है, उसके साथ है एक भरी-पूरी दुनिया- रूढियों, परंपराओं, अभ्यासों, आकांक्षाओं, ईर्ष्याओं से भरी-एक दूसरे के अधिकार झपटते, कुचलते-चूसते और न्याय की रक्षा करते लोगों की जिंदगी। मंदा को इन्हीं के बीच रहना और रास्ता निकालना है। उसकी लड़ाई दुहरी है, औरत होने की और वंचितों के अधिकारों की ....।''

लेखिका मैत्रेयी पुष्पा ने 'इदन्नमम' में मंदा यह पात्र स्त्री जाती के दायित्व के रूप में प्रस्तुत किया है। प्रकृति जिस प्रकार आपत्तियों का सामना करते हुए सारे संसार को संभालती है उसी प्रकार मंदा भी अपना जीवन 'इदन्नमम' कहते हुए स्त्री जाती और वंचितों के अधिकार प्राप्ती के लिए समर्पित करती है। इसलिए शायद लेखिका ने मंदा को प्रमुख पात्र के रूप में प्रस्तुत किया है। उपन्यास का शीर्षक 'इदन्नमम' बहुत ही सार्थक लगता है। इस शीर्षक के माध्यम से समाज को एक नया संदेश लेखिका ने दिया है - आज के समकालीन समय में अन्याय, अत्याचार, संघर्ष, छल-कपट से भरे मानव जीवन को उभारने के लिए 'समर्पण' भावना की आवश्यकता है। अपना जीवन समर्पित करते हुए मानव जाती के कल्याण के लिए मार्ग प्रशस्त करने के लिए हर एक ने 'अप्प दीपो भव' कहते निकल पड़ना चाहिए तभी मानव जाती का कल्याण संभव है।

3.4 सार्थकता :-

'इदन्नमम' की कथावस्तू की विशेषता देखने पर इस कृति का महत्त्व स्पष्ट होता ही है, साथ ही समकालीन समय के संदर्भ में यह उल्लेखनीय कृती है। क्योंकि उपन्यास में चित्रित आँचलिकता विशिष्ट परिवेश की मानव जीवन की समस्याओं को चित्रित करती है परंतु समकालीन परिस्थिति में भारतीय ग्रामों की तरफ देखने पर औद्योगिकरण, भौतिकवाद,

पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव, गंदी राजनीति, भ्रष्ट सरकार, टूटते संयुक्त परिवार, नैतिकता के नये मानदंड, स्त्री की नई सोच, जातीय-धार्मिक संघर्ष और शोषण और अन्याय अत्याचार के पाटों में पिसती बिलबिलाती मानव जाती का वर्णन भारत के गाँव-गाँव का संक्रमण अवस्था से गुजरने का चित्र अंकित करती है। संक्रमण अवस्था से गुजरनेवाले इस समाज को नई दिशा देनी आवश्यक है। इसलिए उपन्यास के प्रारंभ में ही लेखिका ने श्यामली गांव के दादा पंचमसिह्ब, मोदी लल्ला और चीफ साहब के माध्यम से देश की एकात्मता को दर्शाते हुए गांधीवादी विचारों का महत्त्व अभिप्रेत किया है। म. गांधी जी ने देश के लिए अपना समर्पण करते हुए रामराज्य का स्वप्न देखा था, परंतु स्वतंत्र भारत का चित्र बिल्कुल विरोधी रूप में सामने आया। आज समाज में शांती के लिए गांधीवादी विचारों की आवश्यकता है तो शोषण-अत्याचार के खिलाफ मार्क्सवाद का महत्त्व भी लेखिका ने महत्त्वपूर्ण माना है।

आज की स्थिति में देश की सामान्य जनता रोजी-रोटी के तलाश में संघर्षरत जीवन बीता रही है उसे अपनी भूमि में पांव जमाने के लिए फिर एक बार संघटित होकर संघर्ष करना होगा यह संदेश 'इदन्नमम' में लेखिका ने दिखाते हुए 'स्व' का समर्पण करते हुए मानव जाती के कल्याण के लिए रामराज्य की स्थापना होनी चाहिए इस विचार को प्रस्तुत किया है। परीधा गांव के प्रधान टिकमसिंह के माध्यम से औद्योगिकरण, विकास योजनाओं से प्रसित ग्रामीण लोगों के जीवन की समस्याओं को उजागर किया है। तो सोनपुरा के किसान और आदिवासी राउतों का जीवन संघर्ष दिखलाते हुए मार्क्सवादी विचारों की महत्ता स्थापित की है।

'इदन्नमम' उपन्यास आज के समय में सार्थक है क्योंकि लेखिका ने यथार्थवादी जीवन का चित्रण करते हुए आज के मानव को सहज-सरल साध्य जीवनयापन करना हो तो किसी न किसी को नेतृत्व करते हुए 'इदन्नमम' का मंत्र अपनाते हुए समिधा बनना ही होगा। भारतवासियों को अपने देश के विकास के लिए समाजवादी विचारों को अपनाकर इस देश का विकास साध्य करना होगा तभी यह देश महासत्ता कहलायेगा इस सत्यता को 'इदन्नमम' के माध्यम से लेखिका मैत्रेयी पुष्पाने स्पष्ट करते हुए ''इदन्नमम' उपन्यास की सार्थकता को अधोरेखित किया है।

----- -----